हताश पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस मेयर

पूर्व प्रकाशित शीर्षक *सहायता किजिए – मैं हताश हूँ!*

हताश

पर सीधी बातचीत

हताश

पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से
भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस
मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from *The Amplified Bible* (AMP). *The Amplified Bible, Old Testament* copyright © 1965, 1987 by The Zondervan Corporation. *The Amplified Bible, New Testament,* copyright © 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scriptures marked KJV are taken from the *King James Version* of the Bible.

Originally published as *Help Me I'm Discouraged.*

Copyright © 2013 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Straight Talk on DISCOURAGEMENT - *Hindi*
Overcoming Emotional Battles with the Power of God's Word!

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय सूची

	परिचय	vii
भाग एक	**मानसिक उत्पीड़न से स्वतंत्रता**	1
1	जो सबसे बड़ा है व हमारे अन्दर है	3
2	जागते रहें और प्रार्थना करें	11
3	छह बातें जिन्हें हमें, एक उत्तेजना से करना है	19
4	निराशा का सामना करना	29
5	यीशु मसीह में दृढ़ - निश्चय	39
6	परमेश्वर की बातों पर मनन करें	47
7	आशा और उम्मीद	55
8	एक नई बात	61
9	नये दाखरस, नये मशकों	71
	सारांश	77

भाग दो **वचन** 79

हताश पर विजय हेतु कुछ वचन 80

प्रार्थना

हताश से सामना करने के लिए 84

परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध के लिए 85

परिचय

हम सब किसी न किसी समय निराश हुए होंगे। वास्तव में, यह तो बहुत आश्चर्यजनक बात होगी अगर हम पूरे सप्ताह को बिना किसी प्रकार की निराशा का सामना किए हुए गुज़ार दें। हम लोगों को "नियुक्त" (एक विशेष कार्य की ओर ढाला गया है।) किया गया है कि हम किसी बात को किसी विशेष से करें, और जब वह बात उसी प्रकार नहीं घटती है तो हम "निराश" हो जाते हैं।

निराश का अगर सामना नहीं होता है तो यह, हताश में बदल जाता है। अगर हम लम्बे समय तक हताश रहेंगे, तो हमारा विनाश होना सम्भव हो सकता है और विनाश हमें ऐसी स्थिति में छोड देता है जहाँ हम कोई भी बात सम्भाल नहीं पाते हैं।

बहुत से ऐसे निराश मसीही लोग जीवन के मार्ग के किनारे पड़े हुए हैं क्योंकि उन्होंने यह नहीं सीखा कि निराशा को किस प्रकार सम्भालना चाहिए। जिस विनाश को वे अभी अनुभव कर रहे हैं वो शायद किसी छोटी निराशा के द्वारा ही उत्पन्न हुई होगी जिसको कभी सुलझाया नहीं गया होगा।

यीशु मसीह ने उन सब लोगों को चंगा किया जिन्हें शैतान ने मानसिक रूप से दबा कर रखा था (प्रेरितों 10:38)। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि हम एक निराश, विनाशकारी और मानसिक रूप से दबा हुआ, जीवन व्यतीत करें। जब हम "निराश" होतें है तो हमें पुनः "आशावान" व्यक्ति बन जाना चाहिए ताकि हम निरूत्साहित होने के पश्चात् अपना विनाश न करे बैठें।

जब हम अपनी आशा और विश्वास को यीशु मसीह रूपी चट्टान पर रखते हैं (1 कुरिन्थियों 10:4) और शैतान का सामना शुरूआत में ही कर लेते हैं, तब हम प्रभु के आनंद और शांति मय जीवन व्यतीत कर सकते हैं और निराशा से बच सकते है।

भाग एक

मानसिक उत्पीड़न से स्वतंत्रता

1

जो सबसे बड़ा है व हमारे अन्दर है

परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

प्रेरितों 10:38

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु मसीह की बुलाहट, या तो हम ऐसा भी कह सकते हैं कि "उसका काम" यह था कि वो पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर उन लोगों को छुटकारा दिलाए जिन्हें शैतान ने सता कर रखा था। आज भी हमारे लिए वो सामर्थ उपलब्ध है। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि परमेश्वर के संतान किसी प्रकार की पीड़ा

या तनाव महसूस करें। आज भी यीशु मसीह की सामर्थ्य हमें उस मानसिक तनाव से छुटकारा देने के लिए उपलब्ध है।

वेब्स्टर की डिक्शनरी के अनुसार मानसिक रूप से उत्पीड़न का अर्थ है, "किसी को बहुत बड़े भार के नीचे दबाना" खासतौर पर "इतना की मन और आत्मा दब जाए।" दूसरे अर्थ है "कुचलना या अधिक बेचैन होना," या दबाव को महसूस करना!

मैं विश्वास करती हूँ कि शत्रु शैतान, न केवल हमारे मन और आत्मा को सता सकता है परन्तु हमारे शरीर के किसी भी भाग को इसमें शरीर और प्राण भी शामिल है छु सकता है। कभी-कभी वह ऐसे करता है कि हमको स्पष्ट रूप से यह पता भी नही चल पाता है कि वास्तव में हमें कौन सी बात तकलीफ दे रही है।

कभी हम लोग ऐसा महसूस करते हैं कि कोई बहुत भारी चीज़ हमें दबा रही है। हम में से ज्यादा लोगों ने मानसिक उत्पीड़न को उस स्तर तक सहा है जहाँ हमारे लिए कुछ सोचने का निर्णय लेना भी कठिन हो जाता है। दूसरे समय में ऐसा होता है कि हम शारीरिक रूप से तनाव को महसूस करते है।

हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शैतान अलग अलग बार हमारे किसी भी भाग को अलग तरीकों या अलग कारणों के द्वारा सतान की कोशिश करेगा। हमारे पास यीशु के द्वारा वह सामर्थ्य उपलब्ध है जिसके द्वारा हम शैतान के खिलाफ एक आक्रामक लड़ाई को लड़ सकते हैं। अगर हम उसके प्रति आक्रामक नहीं होंगे तो वह हमारे प्रति आक्रामक हो जाएगा।

हालांकि शैतान हर एक प्रकार की बुराई की जड़ है, कुछ ऐसी बातें होती है, जिन्हें हम शरीर में होकर करते हैं जो हमें बहुत बेचैन या अपने ऊपर किसी भार को महसूस कराते हैं। हम बहुत बेचैनी तब महसूस कर सकते है जब हम उन छोटी छोटी समस्याओं का सामना कभी न करें जब से शुरू ही होती है। जो लोग कानाफूसी, शिकायत, पीठ पीछें बुराई या दूसरे का न्याय करते हैं वे अपने ऊपर एक बेचैनी व भार को महसूस कर करते हैं।

हमें अपने आप को ऊपर उठाने के लिए, जैसे की मान लीजिए, कि जीवन जल के सोते हमारे अन्दर से होकर बह रहे हों, हमें शैतान का और उसकी सारी चालों का सामना करना चहिए जो हमे उत्पीड़ित करने की कोशिश करता है। परन्तु हमें अपने ऊपर उत्पीड़न या दबाव को, आने देने से, इनकार करना चाहिए। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें उन बातों को आक्रमिक होकर सुलझाना चाहिए जिन्हें परमेश्वर हमें करने के लिए बोलता है। जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे तो हम कुछ चुनौती पूर्ण कार्यो की जिम्मेदारी ले लेंगे। परमेश्वर हमें अपनी आत्मा देता है कि वो हमारे अन्दर सामर्थ्यशाली रूप से कार्य करे ताकि हम उन कामों को कर सकें जिन्हें उसने करने के लिए कहा है।

वेब्स्टर के अनुसार, आक्रामिक होने का अर्थ है कि किसी ज़ोरदार क्रिया को शुरू करना, "शक्तिपूर्ण" होना या "हिम्मती होकर किसी बात पर जोर डालना," "किसी काम को शुरू करना," जिसका स्वयं यह अर्थ है कि बहुत काल्पनिक होना।

यह परमेश्वर के द्वारा ही रचा गया था, मनुष्य की कल्पना करने की शक्ति को किसी प्रकार से दुष्ट की रचना कल्पना नही है जो कि नए-नए

विचारों को उत्पन्न करती है और नयी प्रक्रियाओं को लेकर आती है सोचिए आदम रचनात्मक रहा होगा जब वह अपनी पवित्रता में ही था और पाप में पतन से पूर्व उसने कैसे सभी जानवारों के नाम रखे थे। हम में से कुछ लोगों को तो अपने कुत्ते के लिए भी एक नाम को सोचने में बहुत मुश्किल होती है।

आत्मा के द्वारा अगुवाई

पवित्र आत्मा की अगुवाई का अनुसरण करने के द्वारा और आत्मा के फलों (गलातियों 5:22,23) को अपने जीवन में साबित करने के द्वारा हम किसी बात की पहल और रचना करने वाले बन जाते हैं। हम जानबूझ कर उस रचनात्मक योग्यता को बाहय रूप से और निखार सकते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर रखा है। बहुत से लोग इस लिए उक्सा जाते है क्योंकि वे एक "दबाव" की स्थिति में हैं बजाय की "परमेश्वर के द्वारा आक्रामिक" स्थिति में हो। परमेश्वर के द्वारा दी गई रचनात्मक गुणों के अभ्यास के द्वारा उक्साने वाली बातों को जड़ से हटा सकते है।

हम में से कुछ लोग स्वाभाविक रूप से ज्यादा रचनात्मक, काल्पनिक, किसी बात को शुरू करने में और उत्तेजना में औरों से अधिक आगे होते हैं। परन्तु हम सब उस रचनात्मक, काल्पनिक, किसी बात को शुरू करने के और उत्तेजना के गुण को इस्तेमाल कर सकते है जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर इसलिए रखा है ताकि हम अपने जीवन में और अधिक संतोषजनक, फलवन्त और परिपूर्ण हो जायें।

बजाय, कि किसी बात के आने का हम इंतज़ार करें, हम स्वयं किसी बात को शुरू कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, बजाय कि हम इस

बात का इंतज़ार करें कि कोई हमारे प्रति दोस्ती बढ़ाये हम किसी दोस्ती की शुरूआत कर सकते है।

शैतान को भागते रहने दीजिए

शैतान हमसे झूठ बोलता रहता हैं (यूहन्ना 8:44) अगर हम उसके प्रति आक्रामक होंगे और उसकी झूठी बातों को सुनना बंद कर देगें तो वो हमारे जीवन को छोड़कर भाग जाएगा। वो एक गर्जते सिंह की भांति आता है (1 पतरस 5:8), परन्तु हमारे भीतर यहूदा का सिंह, यीशु मसही है। वास्तव में हमें इस (विश्वास) गर्जन को करना है।

जब शैतान हमारी ओर एक कदम को बढ़ात है, हमें अपने आप को आत्मिक रूप से इतना होशियार हो जाना चाहिए कि हम वाकई में उस बात को समझ ले कि वो क्या करना चाहता है और फिर उसको पीछे हटने पर मजबूर कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए बस कुछ ही क्षण लगने चाहिए।

शैतान हमेशा हमारे विरोध में आने की कोशिश करता है। जब तक हम पीछे हटते रहते है, वो आगे बढ़कर आता रहता है। अगर हम उस अधिकार के साथ जो यीशु मसीह में हमारे लिए उपलब्ध है, उसका विरोध करेंगे तो शैतान को पीछे हटना होगा।

हमें अपने अधिकार में बने रहकर, उसके खिलाफ खड़े होते रहना चाहिए। अगर हम रूक जायें, तो वो हमारे विरोध में आने लगेगा और हमें पीछे कर देगा। शैतान झूठा है निर्दयता से धौस जमाने वाला है, धोखेबाज है और एक धूर्त है। वो सिंह की नाई तो आता है, परन्तु वो

सिंह नहीं है। मसीह यीशु में हम जो विश्वासी है हमारे भीतर उससे भी बड़े व्यक्ति की सामर्थ्य कार्य करती है। "...जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।" (1 यूहन्ना 4:4)

वचन को भली - भांति समझ लें ताकि जिस भी क्षण आपके मस्तिष्क में कोई ऐसा विचार आता है जो परमेश्वर के वचन से ताल मेल नहीं खाता है, आप शैतान से कह सकते हैं, *"झूठे। नहीं*, मैं तुम्हारी बातों को नही सुन रही हूँ ।"

आप या तो अपने जीवन में पीछे हटते रह सकते है और शैतान से छिपते रह सकते हैं या उसको पीछे हटने पर मजबूर कर सकते हैं।

जीवन का चुनाव कीजिए

> मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और श्राप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिए तू जीव को ही अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें।
>
> व्यवस्थाविवरण 30:19

खुशी और आनंद बाहर से नही आते हैं। वो अन्दर से आते हैं। वो एक ऐसा निर्णय है जो हम अपने विवेक में होकर करते है, एक ऐसा चुनाव है जिसे हम जानबूझ कर करते हैं, एक ऐसा चुनाव है जो हम अपनी जीवन के प्रत्येक दिवस करते हैं।

हमारी सेवकाई में एक जवना स्त्री है जो हमारे लिए काम करती है जो अपने जीवन में बहुत सी बातों को बदला हुआ देखना चाहती है। परन्तु इन सब चुनौतियों के बावजूद भी वो खुश और आनंदित है।

यह जवान स्त्री आनंद से इसलिए नहीं परिपूर्ण है क्योंकि इसके पास कोई समस्याएं नहीं है परन्तु इसलिए कि उसने परेशानियों के मध्य भी अपने जीवन का आनंद उठाने का निर्णय लिया है।

प्रत्येक दिवस उसके पास एक चुनाव हैः यह तो दुःख से परिपूर्ण होने का या तो प्रभु के आनंद से परिपूर्ण होने का।

हम सब लोगों के सामने भी अपने जीवन के प्रत्येक दिवस यह चुनाव है।

हम निशक्रिय होकर शैतान की बातों को सुनने का चुनाव कर सकते है, उसे अपने जीवन को बार्बद और दयनीय अवस्था मे करने की अनुमति दे सकते है या तो हम आक्रामक होकर उसके खिलाफ खड़े होने का चुनाव कर सकते हैं जो उसने अपने पुत्र मसीह यीशु नें हमें दी है।

दोनों ही तरीकों से तो हम स्वर्ग पहुँच सकते हैं। परन्तु क्या हम स्वर्ग पहुँच कर यह पता लगाना चाहेंगे कि मार्ग में हमें कितना आनंद उठा सकते थे? आइए हम अभी जीवन का चुनाव करें और जीवन का आनन्द उस प्रकार उठायें जैसा परमेश्वर चाहता है।

2

जागते रहें और प्रार्थना करें

जागते रहो, (ध्यान दें, सचेत और सक्रिय रहें) और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ोः आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।

मत्ती 26:41

मान लीजिए कि आपको यह ज्ञात हो कि आपके घर के चारों ओर शत्रु के लोग खड़े है और वे किसी भी क्षण दरवाज़े को तोड़कर आप पर हमला कर सकते हैं। क्या आप सोचते हैं कि आप जागते रहने और दरवाज़े पर पहरा देने का चुनाव करेंगे?

आप क्या करेंगे अगर किसी कारणवश आप जागते रहकर पहरा नही दे सकते है तो? क्या आप इस बात का निश्चय नही कर लेगे कि आपके परिवार का कोई और व्यक्ति इस बात से सचेत हो जाए और खतरे के प्रति चौकस हो जाए?

इस पद में, यीशु कहता है कि जागते रहो, ध्यान दो, सचेत और सक्रिय रहो और प्रार्थना करते हुए पहरा दो।

विश्वासी होने के नाते, हमें निरन्तर चौकस, फूर्ती और जागते रहना चाहिए। फिर, अगर जरूरत हो तो हमें भी शत्रु पर आक्रमण करने के लिए हथियार उठाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

एक योद्धा बने

विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़...

1 तीमुथियुस 6:12

अग्रसर बनने से मतलब है कि एक योद्धा बनना।

जैसा पौलुस प्रेरित कहते थे कि मैं ने तो विश्वास की अच्छी कुश्ती को लड़ लिया है (2 तीमुथियुस 4:7), उसी प्रकार उन्होंने अपने जवान शिष्य तीमुथियुस को भी विश्वास की अच्छी कुश्ती को लड़ने की शिक्षा दी।

उसी प्रकार, आपको और मुझे विश्वास की अच्छी कुश्ती को प्रतिदिन अपने जीवन में लड़ना है, जैसे-जैसे हम उँचे स्थानों में और अपने मन और हृदय मे आत्मिक शत्रुओं के खिलाफ जूझते रहते हैं।

विश्वास की अच्छी कुश्ती को लड़ने का एक हिस्सा है कि हम शत्रु को पहचान लें। यह भी जान लें कि कब सब कुछ ठीक हैं और कब सब कुछ बिगड जाता है।

आइए मैं आपको एक उदाहरण दूँ।

कुछ समय पहले मैं किसी विशेष व्यक्ति से वार्तालाप में लगी हुई थी। जैसे ही मैं इस व्यक्ति को सुनने लगी, मैं गड़बड़ी महसूस करने लगी। मैंने इस बात को पहचाना कि हर बार जब मैं इस व्यक्ति से बात करती हूँ तो ऐसा होता है।

ज्यादातर तो मैं बस यह सोचती रहती थी कि "पता नही, क्या गड़बड़ है। मुझे यह समझ नहीं आता कि क्यों यह हो रहा है।" बस मैं उस व्यक्ति के साथ बिल्कुल भी आराम नही महसूस करती थी।

जितना ज्यादा मैं उस के बारे में सोचती थी, उतना ज्यादा मैं यह देखती थी कि समस्या क्या है। प्रत्येक बार जब हम दोनों की मुलाकात होती थी और जैसे ही मैं उससे बात करना शुरू करती थी मैं चिन्ता करने लग जाती थी कि कहीं यह व्यक्ति मेरी किसी बात के लिए गलतफ़हमी तो महसूस नही कर रहा है।

फिर जब मैं उससे मिलती थी तो वही भावना मेरे अन्दर उजागर होने लगती थी। परन्तु इस बार मैंने भी एक आक्रामक कदम बढ़ाया। मैं बस रूक गई और प्रार्थना करने लगी, "यीशु मसीह के नाम से मैं इस आत्मा के उपर अधिकार करती हूँ। मैं चिन्ता नही करूँगी। अगर इस व्यक्ति को मेरी कोई बात अच्छी नही लगी तो यह उनके और परमेश्वर के बीच की बात है।"

"मुझे तो स्वतंत्र रहना है। मैं जिन्दगी भर इस बात पर नहीं आधारित रहूँगी कि दूसरे लोग क्या सोचेंगे। शैतान, मैं इस चिन्ता को नही करूँगी। यीशु के नाम से, यह खत्म हुआ।"

मैंने एक निश्चय किया और स्वतंत्रता मेरे अन्दर संचारित होने लगी। जब तक मैं निष्क्रिय थी शैतान मुझे उतपीड़ित कर रहा था।

यही हमारा समस्या है, हम निष्क्रिय है। बहुत बार हम शत्रु के खिलाफ नही बढ़ते हैं जब वो हमारे विरोध में चिन्ता, भय शक या आत्मा-ग्लानि के साथ खड़ा होता है। हम तो बस किसी किनारे में पीछे हट जाते हैं और उसको अनुमति देते है कि वो हमें मार ले।

आपको और मुझे शैतान के मुक्के ख़ाने वाला थैला नहीं बनना है; परन्तु हमें तो योद्धा बनना है।

अब शैतान तो यह चाहता है कि हम स्वाभाविक रूप से उन सब से लड़ते रहे जो हमारे चारों ओर है। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि हम उस सब गन्दगी को जो शैतान हमारे अन्दर उत्तेजित करता है कि हम दूसरे लोगों के प्रति क्रोधित हों, उस सब बातों को भूल जायें। परमेश्वर चाहता है कि हम उन आत्मिक शत्रुओं के खिलाफ लड़े जो हमारे जीवन के प्रति युद्ध करते है और हमारी शांति को चुराते हैं।

क्या बात साधारण है?

क्योंकि कि जहाँ डाह (जलन) और विरोध (शत्रुता और स्वार्थ भाववना) होता है वहाँ अस्तव्यस्तता (तकलीफ, अशांति, बलवा) और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र (निष्कलेंकित) होता है, फिर मिलनसार, कोमल और मृदभाव (होने का इच्छुक होता है) और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात

और कपट रहित (सब प्रकार की शंकाओं डगमगाति बातों और बेईमानी से) मुक्त होता है।

याकूब 3:16,17

गड़बड़ी एक नया जन्म पाए हुए विश्वासी के लिए एक साधारण स्थिति नही हैं, तब तक तो बिल्कुल नही जब तक उन सब बातों में परमेश्वर की दृष्टि होती है। तो कभी भी जब हम अपने भीतर गड़बडी को उजागर होता पाए तो हमें उस पर हमला करना है।

परन्तु बहुत बार हम बस सोचते रहते हैं कि कुछ तो हमारे साथ गलत है बजाय कि हम इस समस्या को पहचाने कि हम एक आत्मिक हमले के अन्दर हैं।

दूसरी गलती जो हम करते हैं वो है हम हर बातों को आंकते रहते हैं बजाय कि यीशु मसीह की आज्ञानुसार जागते रहें प्रार्थना करते रहें।

किसी भी समय जब हम कुछ गड़बड़ी को महसूस करते हैं या किसी भी समय हम दबाव या आत्मा में भार को महसूस कते है, हमें जागते रहना है और प्रार्थना करना है। इसी प्रकार आप बिना रूके प्रार्थना में आगे बढ़ते रहते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। आप जब भी प्रार्थना करना महसूस करेंगे तो आप पहले से ही तैयार रहेंगे।

परन्तु विश्वासी के लिए साधारण स्थिति क्या है? इस प्रशन का उत्तर देने के लिए आइए हम इस बात को देखना शुरू करें कि असाधारण स्थिति क्या है ?

चिन्ता करना साधारण बात नहीं है। अगर हम तर्क करने और उन बातों को आंकने से जिनका कोई उत्तर नही है, अपने आप को सताते

रहते हैं तो यह कोई साधारण बात नही है। इस बात से परेशान होना कि लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे यह साधरण बात नहीं है। यह भी साधारण बात नही है कि हम निराश और दबा हुआ महसूस करें और यह सोचें कि हम किसी लायक नही है। यह सोचना कि हम असफल हैं भी साधारण बात नही है।

यह बातें कुछ लोगों के लिए साधारण होंगी, परन्तु परमेश्वर न कभी इन बातों को सही नहीं सोचा है। परमेश्वर ने कभी यह नही सोचा कि जीवन इस प्रकार का हो-कि हम निरन्तर एक मानिसक उपद्रव या अपने विचारो के द्वारा सताव को महसूस करें।

जब इस प्रकार के विचार हम पर आते हैं, हमें इस बात को पहचानना चाहिए कि वे क्या है-शत्रु की झूठी बातें है।

वॉचमेन नी, अपनी पुस्तक, *द स्पीरीच्युल मैन* के इस हिस्से में जिसका शीर्षक *वेइट्स ऑन दि स्पीरिट्* है, मे लिखा है कि इन परिस्थितियों मेंः "आत्मा की एक सिद्ध स्वतंत्रता की स्थिति में होना चाहिए।" वह इतना हल्का होना चाहिए मान लीजिए हवा में तैरता हुआ...। एक मसीही को यह मालूम होना चाहिए कि उसकी आत्मा में कौन सा भार रखा हुआ है। बहुत बार वह एक दबाव को महसूस करता है, जैसे कि हजारों किलो का भार उसके हृदय को दबा रहा है...। यह शैतान की और से आत्मिक लोगों को सताने के लिए, उन्हें उनके आनंद और हल्के पन से वंचित करने के लिए तथा उनकी आत्मा को पवित्र आत्मा के साथ मिलकर काम न करने देने के लिए नियुक्त किया गया है। एक स्वतंत्र आत्मा, जय का आधार है... जब भी आत्मा

एक दबाव को महसूस करती है तो हमारा मन ठीक रूप से कार्यशील नहीं होता है।

हमारे सारे अंग साथ मिलकर काम करते हैं। हमें अपने आप को एक स्वतंत्र तथा सही स्थिति में रखना चाहिए। यह करने के लिए, अपने आप को यीशु मसीह की अगुवाई के अधीन कर लेना चाहिए।

मसीह की प्रभुत्व

> सलिये हम कल्पनाओं का, और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की (सही) पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते है; और हर एक भावना को कैद करके मसीह (जो अभिषिक्त) का आज्ञाकारी बना देते है।
>
> 2 कुरिन्थियों 10:5

प्रभु हमें शैतान के ऊपर जय देगा, परन्तु यह तब करेगा जब हम उसको प्रार्थना में पुकारेंगे और उससे अपनी समस्याओं को सुलझाने की माँग करेंगे।

कुछ भी हमारी परिस्थितियों को नहीं बदलेगा अगर हम बस बैठे ही रहें और यह कामना करें कि काश, सबकुछ बदल जायें। हमें एक क्रिया को भी करना है।

प्रभु तो तैयार है, इच्छुक भी है और योग्य है कि वो अपने लोगों के लिए निष्क्रियता, उदासीनता, कामचोरी, सुस्ती और कामों को टालने वाली प्रवृत्ति-के क्षेत्र मे कुछ करें प्रत्येक बाते जो हमें चारों और से ढांप

कर हमें निराशा, निरूत्साहन और हताश अवस्था भी अपनी भूमिका अदा करना चाहिए।

हम ऐसे लोग नहीं है जिन्हें अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए बुलाया गया है। हम ऐसे लोग हे जिन्हें परमेश्वर के वचन को मजबूती से पकड़कर अपने प्रतिदिन के जीवन में लगाने के लिए बुलाया गया है। ऐसा करने के लिए, हमें आत्मिक रूप से सचेत रहना है—हर समय।

3

छह बातें जिन्हें हमें, एक उत्तेजना से करना है

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं (जैसे एक बहुमूल्य इनाम होता है – स्वर्गीय राज्य में एक हिस्सा जो कि बहुत जोश और कठोर श्रम के द्वारा खोजा गया होता है)।

मत्ती 11:12

हमें परमेश्वर के राज्य को लेना चाहिए—धार्मिकता, शांति और आनंद (रोमियों 14:17)—एक ज़ोर के साथ । जैसे ही आप निराश महसूस करें, शैतन को शुरू में बड़ी उत्तेजना के साथ रोक दें।

मेरे सालों की सेवकाई के पशचात्, तथा मेरे व्यक्तिगत मसीही जीवन के द्वारा मैंने उन छह बातों को सीखा है जिन्हें बड़ी उत्तेजना के साथ करना है।

1. **उत्तेजना पूर्वक सोचें!**

> या कौन ऐसा राजा है, जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार (लोगों को) लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं?
>
> लूका 14:31

एक सेनापति जो युद्ध की तैयारी करता है वो बहुत विचार करता है। वह यह योजना बनाता है और आँकता है कि किस प्रकार यह शत्रु को पराजित कर सकता है और अपनी व अपनी सेना को सबसे कम खतरे में रख सकता है।

आपको और मुझे अपने मसीही युद्ध तथा अपने प्रतिदिन के जीवन में ठीक यही करना चाहिए।

हमें यह सोचना चाहिए "कैसे मैं कर्जे से निकलू? कैसे मैं अपने घर को सफाई कर सकता हूँ? कैसे मैं अपने परिवार के लिए और उत्तम उपाय कर सकता हूँ?"

परन्तु हमें यह भी सोचना चाहिए, "कैसे मैं अपनी सेवकाई के द्वारा लोगों तक पहुँच सकती हूँ? कैसे मैं अपने पड़ोसी को भलाई के लिए प्रभावित कर सकती हूँ? कैसे मैं गरीबों के लिए एक आशीष बन सकती हूँ? कैसे हम परमेश्वर को और अधिक दे सकती हूँ?"

इस बारे में सोचें। अपने आप से पूछे कि कैसे आप प्रभु के कामों में और अधिक लग सकते है तथा सक्रिय हो सकते हैं।

निश्चय ही, अगर आपका एक परिवार है तो उनके लिए आपकी ज़िम्मेदारी प्रथम स्थान पर हो जायें। अगर आपके छोटे बच्चे हैं तो आपको अपनी प्रथम ज़िम्मेदारी की रेखा से बाहर नही होना चाहिए। आपको उनके साथ भी काफी समय व्यतीत करना चाहिए, खास तौर की उनके शुरूआत के सालों में।

परन्तु कभी तो अपने परिवार और सेवकाई दोनों को सम्भालना सम्भव हो जाता है। मैंने कई सालों तक ऐसा ही किया। मैंने अपनी सेवकाई, लाइफ् इन दि वर्ड, जब शुरू किया तो मेरा बेटा केवल एक साल का था।

आप पायेंगे कि आप वो सब काम कर सकते हैं जो शुरू में असम्भव दिखती है, *अगर* आपको परमेश्वर ने बुलाया है तो उसको पूरा करें और *अगर* आप यह किसी भी कीमत पर करना चाहते है ।

रचनात्मक रूप से सोचें । केवल बैठे रहकर यह न सोचे कि आप और बहुत कुछ कर सकते है। प्रारम्भ कदम उठायें और शुरू हो जायें।

उत्तेजित रूप से सोचें !

2. उत्तेजना पूर्वक प्रार्थना करें!

इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन (हम पापियों के लिए परमेश्वर की कृपा का सिंहासन जो हमारी योग्यताओं पर आधारित नही है) के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह (अपनी असफलताओं के लिए) पाएँ जो आवश्यकता

के समय हमारी सहायता करे (सही मदद जो सही समय पर आए, ठीक तब आए जब हमें उसकी जरूरत हो)।

इब्रानियों 4:16

हमें कैसे परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख आना है? निडर, दृढ़ और हियाव बांधकर ।

इसका मतलब है उत्तेजित होकर!

आपको और हमें परमेश्वर के साथ शर्मीला या डरपोक बनने की ज़रूरत नही है। हम एक दृढ़ निश्चय के साथ आगे कदम बढ़ाकर उसको अपनी ज़रूरतों के बारे में बता सकते है। हम उसे बता सकते है कि हम उससे यह उम्मीद करते है कि जो कुछ भी प्रतिज्ञाएँ उसने अपने वचन के द्वारा हमें दी हैं उनको वह हमारे लिए पूरा करे।

इफिसियों 3:20 में परमेश्वर हमें बताता है कि वो "...हमारी (निडर) विनती और समझ (हमारी सर्वोच्च प्रार्थनाओं, इच्छाओं, विचारों, आशाओं और स्वप्नों से कहीं अधिक परे) से कहीं अधिक काम कर सकता है...।"

"निडर" शब्द पर ध्यान दें। आपको और हमें दृढ़ निश्चयी, हियावी, उत्तेजित और निडर मसीही होना है।

जब आप परमेश्वर के सिंहासन के पास जायें तो एक उत्तेजना से जाएँ!

3. उत्तेजना पूर्वक बोलें!

यदि कोई बोले । तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है...।

1 परतस 4:11

परमेश्वर की संतान होने के नाते, आपका और मेरा स्वर उत्तेजनापूर्ण होना चाहिए।

अब जब मैं उत्तेजनापूर्ण बात करने के विषय में बोलती हूँ, तो इसका यह अर्थ नही कि आप शारीरिक रूप से आक्रामक हो जायें। मैं तो आत्मिक रूप दुष्ट शक्तियों के विरोध में आक्रामक होने की बात कर रही हूँ।

आइए मैं आपको उदाहरण दूँ।

एक स्थान पर तो बाइबल यह, सिखाती है कि हमें कबूतर की नाई शांत स्वभाव का होना चाहिए (मत्ती 10:16), परन्तु दूसरे स्थान में यह सिखाती है कि हमें एक सिंह की नाई साहसी होना है (नीतिवचन 28:1) मुझे इन दोनों रूपकों को साथ जोड़ने में काफ़ी कठिनाई होती थी।

फिर मैंने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचा जो किसी नौकरी में हो और जब उसके अधिकारी जो मसीही नही होता है उसको अपने पास बुलाकर उसके साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर देता है। उस कर्मचारी को मालूम होता है कि अगर वो पलट कर जवाब देगा तो उसे नौकरी से निकाल दिया भी जायेगा। इसलिए वो बस खामोश खड़ा रहता है, और यह इंतजार करता है कि परमेश्वर उसका बदला लेगा।

हालांकि वो बाह्य रूप से एक कबूतर की नाई कोमल है, भीतर से वो एक सिंह की नाई साहसी है।

इसी प्रकार, आपको और मुझे भी कभी कभी शारीरिक रूप से तो निष्क्रिय होना चाहिए परन्तु आत्मिक रूप से आक्रामक होकर प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए। हम कड़े शब्दों को शारीरिक रूप से तो अपने प्रति

की अनुमति दे सकते हैं परन्तु हमें आत्मिक रूप से उन शब्दों को नही ग्रहण करना चाहिए।

हमें अपने ऊपर दंड आने देने से इन्कार करना चाहिए। जबकि हमें शारीरिक रूप से सताया जाता है तो हम आत्मा में होकर प्रार्थना कर सकते है।

फिर जब हम एक बार उस स्थिति से बाहर निकल जाते हैं तो हमें अपने मुँह में आक्रामक रूप से बोलना है और उन आत्मिक शत्रुओं के खिलाफ अधिकार लेना है जो हमारे विरोध में दुर्व्यवहार करते है।

जैसे ही कोई शारीरिक रूप से मेरे विरोध में आने लगता है, तुरन्त मैं आत्मा मे होकर प्रार्थना करने लगती हूँ। मुझे मालूम है कि मुझे उन सब बुरी बातों को अपने अन्दर नहीं ग्रहण करना है, इसलिए मैं आत्मिक रूप से अपना बचाव करती हूँ।

कई वर्षों तक मैंने दूसरे लोगों को यह अनुमति दी कि वे अपने कचड़े का ढेर मेरे ऊपर जमा कर लें। फिर बाद में मैं उन बातों का बदला शारीरिक रूप से उनके खिलाफ लेती थी। आखिरकार मैंने यह जाना कि ऐसी कोई भी चालें सफल नही होती है। उसके पश्चात् मैंने यह पाया कि असल में कौन सी बाते काम करती है।

मैंने उस कठिन रस्ते को जाना कि हमारा युद्ध माँस और लहू के खिलाफ नही परन्तु वे प्रधानताएँ और शक्तियों और आत्मिक पुष्टताएँ जो उच्च स्थानों में हैं उनके खिलाफ है। इसलिए मैंने यह सीखा कि आत्मिक बलयुद्ध को कैसे करना चाहिए।

आपको भी शायद ऐसा ही करने की आवश्यकता हो। एक कबूतर की नाई कोमल और एक सिंह की नाई साहसी बनें। एक आक्रामक स्वर को पैदा करें।

जब आप किसी से बात करते है तो आप अपने सिर को न झुकाएँ और न कुड़कुडाए ही फुसपुसाएँ या विला करें। सीधे खड़े रहे, उनकी आँखों में देखकर और बात करें सकारात्मक से, निश्चित और स्पष्ट रूप से बात करें स्पष्ट रूप से उच्चारण करें और निश्चित रूप से विवरण दें। अपनी बातों को सही ढ़ग से समझायें।

खस्ता-हाल, असुरक्षित और अनिश्चित मत बनो। अपने मुँह खोलने का साहस रखो और जो कुछ आपको कहना है उसे आत्मविश्वास और निश्चयता के साथ कहिये।

अगर आप गाने या परमेश्वर की आराधना करनेवाले है तो उसे भी उत्तेजित रूप से करें।

जब भी आप कुछ बोलने के लिए अपना मुँह खोलें, तो ऐसा प्रतीत हो मानें परमेश्वर के वचन बोल रहे हों। बड़े उत्साह, आनंद और शिष्टतापूर्ण ऐसा करें—और उत्तेजित हो कर करें।

4. **उत्तेजना पूर्वक दें।**

दिया करो, तो तुम्हें भी (दान) दिया जाएगा; लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद (तुम्हारे वस्त्रों को जिसे थैले के समान इस्तेमाल किया जाएगा) में डालेंगे। क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो (जो नाप जो तुम दूसरों के प्रति भलाई में इस्तेमाल करते हो), उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।

लूका 6:38

जब आप और हम देते हैं, हमें उदारता और उत्तेजना पूर्वक देना है। क्योंकि जिस नाप से हम देते हैं उसी नाप से हम पाते भी है।

जब हम अपने बटुए या थैले में देखते हैं, तो हमें जो सबसे छोटा रूपया मिलें उसे नहीं निकालना है। परन्तु हमें उस प्रकार देना है जैसे परमेश्वर देता है—बहुतायत से।

अब मैंने जाना कि कोई भी दान बहुत छोटा या कोई भी दान बहुत बड़ा नही होता है। परन्तु उसी समय हमें उत्तेजना पूर्वक दूसरो को उसी प्रकार देना चाहिए जैसा हम अपने मसीही जीवन के अन्य पहलुओं को ध्यान में रखते हुए उत्तेजित होते हैं।

मैं एक दानी बनने का प्रयास करती हूँ। हर समय मेरी यह इच्छा होती है कि मैं कुछ न कुछ देती रहूँ।

एक बार जब मैं एक मसीही पुस्तकों की दुकान में गई थी तो मैंने एक छोटे से दान के डिब्बे को देखा जो कि एक ऐसी सेवकाई के लिए था जो भूखे बच्चों को खाना खिलाती थी। उसके नीचे एक पर्ची थी जिस पर यह लिखा था कि "50 सेन्टस् में दो बच्चें दो दिन तक खाना खा सकते हैं।"

जब मैं अपने बटुए को खोलने लगी और उस दान को निकालने लगी तो मेरे भीतर से एक आवाज़ आयी, "तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नही है; तुम तो हर समय देती ही रहती हो।"

उसी समय मैं उत्तेजित हो गई-आत्मिक उत्तेजित! बाह्य रूप से मुझे देखकर कोई कुछ नही कह सकता था, परन्तु भीतर से मैं भड़क गई थी। मैंने अपने बटुए को खोला, थोड़े रूपए निकाले और उस डिब्बे में डाल

दिया बस यह साबित करने के लिए कि मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा से दे सकती हूँ!

आप भी ऐसा ही कर सकते हैं। जब भी आप कुछ देने की परीक्षा में कदम पीछे करते है, तो आप अधिक दीजिए। शैतान को दिखायें कि आप एक उत्तेजित दानी है!

5. **उत्तेजित होकर काम करें।**

जो काम तुझे* (तेरे हाथ को करने के लिये) मिले उसे अपनी शक्ति भर करना...।

सभोपदेशक 9:10

हम जिस भी काम को करने के लिए अपने हाथ को बढ़ाते है, व काम हमें जोश के साथ करना चाहिए।

अपने जीवन में किसी भी काम को भयभीत होकर न करें और यह कामना करें कि कैसे इस काम से बच सकते हैं। अपने आप को पवित्र आत्मा से उत्तेजित करें और हियाब के साथ यह घोषण करें, "यह काम मुझे परमेश्वर ने करने के लिए दिया है, और पवित्र आत्मा की सहयता से मैं अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर की महिमा के लिए इसको करूँगा!"

6. **उत्तेजित रुप से प्रेम करें।**

मेरी आज्ञा यह है, कि (ठीक) जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

इससे बड़ा प्रेम (और किसी ने इससे मजबूत स्नेह नही व्यक्त

किया है) किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

यूहन्ना 15:12,13

परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखना है जैसा परमेश्वर ने हमसे किया। इसका अर्थ है लगन—और बलिदान पूर्वक।

प्रेम एक कोशिश है। हम किसी को भी प्रेम नही कर सकते है अगर हम कीमत को चुकाने के लिए इच्छुक नही हैं।

एक बार मैंने एक स्त्री को बहुत सुन्दर कान की बाली दी। शारीरिक रूप से तो मैं उन्हें अपने लिए रखवाना चाहती थी, परन्तु मेरी आत्मा प्रभु की आज्ञा पालन करना चाहती थी और उन्हें उसको देना चाहती थी।

बाद में एक दिन सभा में वह स्त्री खड़े होकर यह बताया कि उसने जो बाली पहने है वो कैसे उसको किसी ने "मुफ्त बेंट" के रूप में दिया है।

प्रभु ने मुझसे बात की और कहा, "हाँ, जिस प्रकार उद्धार आपके लिये एक वरदान है परन्तु इसके लिये यीशु को अपना प्राण देना पड़ा उसी प्रकार यह उसके लिये एक उपकार था, परन्तु तुमने उसका मूल्य चुकाया है।"

प्रेम सबसे बड़ा दान है। जब आप परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करते है, आप उसको एक दम खुल कर बाँटे, बलिदानपूर्वक—और उत्तेजना पूर्वक।

4

निराशा का सामना करना

वेब्स्टर के अनुसार, *निराश* होने का अर्थ है "आशा, इच्छा या किसी उम्मीद को तृप्त करने में असफल होना।"

दूसरे शब्दों में, जब हम अपने आप को आशा, इच्छा या किसी बात की उम्मीद के लिए देते हैं और फिर जब वो आशा, इच्छा या उम्मीद पूरी नही होती है तो हम निराश हो जाते हैं।

हम में से कोई भी जीवन में कभी उस स्तर पर नही पहुँच पायेगा जहाँ हमें कोई और निराश न हो। किसी के पास भी उतना विश्वास नही है। निराशा जीवन की एक सच्चाई है, ऐसी सच्चाई जिसका सामना करना आनिवार्य है अन्यथा यह आशा हीन की और ले जाती है; जिसका अगर सामना न किया जाए तो अंत में यह हमें विनाश की ओर ले जाती है।

बहुत बार लोगों का अंत विनाश में होता है और ये इस बात को समझ नही पाते हैं। वे यह समझ नही पाते कि समस्या तो बहुत समय पूर्व

ही एक साधारण निराशा के साथ शुरू हो गई थी, यह तो आगे चलकर और गम्भीर समस्या का संकेत हो सकता है।

लक्षणों के संकेत से सावधान हो जायें

अगर सुबह उठते समय मुझे छींक आने लगती है और मेरे गले में अगर थोड़ी भी खराश होती है और मुझे अगर जरा भी सर दर्द होता है तो मैं समझ जाती हूँ कि मुझे सर्दी लग गई है। मैंने यह जाना है कि अगर मैं प्रार्थना करूँ, कुछ अधिक मात्रा में विटामिन–सी और विटमिन–ए ले लूँ और कुछ अधिक आराम करूँ, तो मैं बहुत बार पहले से ही आने वाली बीमारी को दूर भगा सकती हूँ।

बीमारी ज्यादातर कुछ पूर्व लक्षणों के साथ ही आती है, ऐसे चिह्न की कुछ कहीं पर गड़बड़ है और पहले की यह बहुत बुरी हो जाए, इसका इलाज हो जाना चाहिए।

निराशा भी ठीक उसी तरह काम करती है। यह भी कुछ पूर्व लक्षणों के साथ आती है और जब हम महसूस कर लेते हैं कि हमारे विरूद्ध क्या आने वाला है तो हमें तभी आक्रामक कदम को उठाना चाहिए।

जैसा कि हमने बात की है, जैसे ही हम उन पहले चिह्नों को जाँच लेते है कि हम शैतान के हमले के अन्दर हैं तो हमें शुरूआत में ही उसका सामना करना चाहिए। एक दम शुरूआत में ही जब हम निराशा को अनुभव करते हैं तभी एक प्रभावशाली कदम को उठाना हमारे लिए और भी आसान हो जाता है, बजाय कि तब तक इंतज़ार करें जब तक हम निराशा और आशाहीनता की गहराई में पहुँच जाते हैं।

हम सब यह जानते हैं कि यह कितना अधिक आसान होता है जब हम उस व्यक्ति को तुरंत क्षमा कर देते हैं जिसने हमारे प्रति कुछ गलत किया होता है बजाय कि उस व्यक्ति को तब क्षमा करें जब तक हम शैतान को अपने ऊपर काम करने का अवसर दे देते है और हमें वो और भी ज्यादा क्रोधित, कडवा और कठोर बना देता है।

निराशा के साथ भी यह लागू होता है। यह बहुत आसान और अधिक प्रभावशाली होता है जब हम उसको सही रूप से लेते है बजाय कि तब तक इंतज़ार करें जब तक कि वो निरूत्साहन, मानसिक दबाव और विनाश में उजागर नहीं हो जाता है।

निराशा के कारण

मान लीजिए कि आप पिकनिक पर जा रहे है, या बाहर बैठकर मॉस भून कर पकाने, या अन्य कोई बाहरी कार्य, जैसे अगर आपने किसी विवाह भोज की योजना बनायी हो और अचानक बारिश हो जाए।

आपने अपने परिवार के सभी लोगों तथा अपने मित्रों को निमंत्रण दिया हो, बहुत ज़ोर शोर की तैयारी की हो और बहुत समय तथा रूपए को खर्च किया हो कि सब कुछ भली–भांति हो जाए। फिर अचानक बारिश शुरू हो जाती है और आप बस उस गीली गड़बड़ी में ही रह जाते हैं।

यह निराशाजनक बात है। परन्तु यह एक छोटी निराशा है, एक ऐसी जिससे हम उभर सकते है।

मैंने यह सीखा है कि ऐसे समय में बजाय कि परेशान होने के मुझे बस इतना कहना है, "ओह, अच्छा, यह तो निराशाजनक बात है, परन्तु

दुनिया का अंत यहीं नहीं हो जाता है। मुझे इस समय का भी उत्तम प्रयोग करना चाहिए।"

दूसरी निराशाएँ और भी अधिक गम्भीर और नुकसान देय होती हैं—खास तौर कि अगर इसमें लोग शामिल होते हैं बजाय कि बिना जीवन की बातें, जैसा कि मौसम।

कुछ ही पर भरोसा करें

परन्तु यीशु ने (अपने लिए) अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब (लोगों) को जानता था।

यूहन्ना 2:24

इन निराशाओं को छोड़कर जिन्हें हम सब को झेलना होता है क्योंकि जीवन सिद्धता से कुछ कम है, कुछ ऐसी भी निराशाएँ होती हैं जिन्हें हमें बर्दाश्त् करना पड़ता है क्योंकि लोग स्वयं सिद्ध नही होते हैं।

आखिरकार, सभी लोग, यह माने नही रखते हैं कि वे कौन हैं, हमें निराश करेंगे अगर हम उन पर अपना बहुत भरोसा रखेंगे। यह कोई मनुष्यद्वेषी सिद्धान्त या न्याय करना नही है, यह तो केवल जीवन की एक सच्चाई है। यह इसलिए भी कि हमारे लिए यह उत्तम होता है कि हम दूसरों पर बहुत ज्यादा भरोसा ना करें—यहाँ तक की उन लोगों पर भी जो हमारे बहुत नजदीक है।

अब यह बात तो सुनने में थोड़ी अटपटी लगेगी, खासतौर कि जब ये बात किसी ऐसे व्यक्ति से आए जिसने कई साल तक लोगों पर भरोसा करना सीखने में बिता दिए।

परन्तु जैसा हमने यीशु के जीवन से देखा है, यह तो सम्भव होता है कि हम एक विशेष मात्रा में लोगों पर भरोसा कर लें बिना अपने आप को पूरी तरह उनके सामने एक असंतुलित और मूर्खतापूर्ण रूप से खोलकर।

यीशु के सदृश, आपको और मुझे सबसे प्रेम करना चाहिए, परन्तु हमें सब पर सौ प्रतिशत भरोसा नही करना चाहिए। ऐसा केवल एक मूर्ख ही करता है। क्यों? क्योंकि जल्दी या देर से, लोग हमारा भरोसा तोड़ देंगे जिस प्रकार जल्दी या देर से, लोगों का भरोसा तोड़ देते है।

गलतियाँ करना तो मनुष्य का एक हिस्सा है। एक बुद्धिमान व्यक्ति ही अपने आपको इसके प्रति सुरक्षित रखता है—अपने आप में और दूसरों में।

बहुत ज्यादा तरीकों में, निराशा का सबसे उत्तम हल है कि उसको ज्यादा से ज्यादा टाल दें। ऐसा करने का सबसे उत्तम तरीका है कि हम अपनी आशाओं, इच्छाओं और उम्मीदों में वास्तविक बने, खासतौर पर जब ये किसी व्यक्ति से संबधित हो, यहाँ तक कि अपने आप को भी हम इसमें शामिल करें।

> ...बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास रहती है।
>
> नीतिवचन 10:1

कभी कभी बच्चे अपने माता पिता के लिए निराशा का कारण बन जाते हैं। आज बहुत से माता—पिता को लगता है कि उनके बच्चे कभी भी उनका एक भी बात नही मानते हैं, सब कुछ एक कान से अन्दर जाता है और दूसरे कान से बाहर चले जाता है।

मुझे मालूम है यह कैसा होता है। जब मेरा बेटा डैनी बड़ा हो रहा था, वो भी बिल्कुल ऐसा ही था। मैं किसी मुख्य विषय में उससे बात करती थी, और वो बस मुझे एक टक देखता रहता था जैसे कि उसने मेरा एक भी बात न सुना हो।

एक बार स्कूल में दोपहर के भोजन के समय उसे उसकी किसी मूर्खतापूर्ण बात के लिए सज़ा मिली थी। जब मैंने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो उसने बस अपने कंधों को उचकाया।

"यह कोई उत्तर नहीं है," मैने कहा, "अब मुझे बताओ, कि तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"मुझे नहीं मालूम," उसने धीमे से कहा।

न जाने मैंने उससे कितनी बार यह पूछा कि उसने ऐसे मूर्खतापूर्ण काम को क्यों किया, उसका उत्तर हमेशा वही होता था, "मुझे नहीं मालूम।"

इसलिए मैंने उसे थोड़ा उपदेश दिया कि अच्छा व्यवहार करना, ध्यान देना और जितना वो अपने भविष्य की तैयारी के लिए सीख सकता है उसे सीखना कितना महत्वपूर्ण है।

दूसरे ही दिन मैंने उसे स्कूल भेजा इस उम्मीद के साथ कि अब मैं उसके बर्ताव और व्यवहार में एक बहुत बड़े सुधार को देखूँगी उल्टा, जब वो घर आया तो उसके पास उसके अध्यापक द्वारा लिखा एक पत्र था जिस पर यह लिखा था कि जब से स्कूल प्रारम्भ हुआ है तब से डैनी का यह सबसे खराब दिन बीता है।

ऐसी बात तो एक माता–पिता के लिए निराशाजनक बात होती है। ज्यादातर यह समस्या और बुरी हो जाती है जैसे वो बच्चा और बड़ा होने लगता है, क्योंकि उससे और अधिक उम्मीद की जाती है।

जितनी बड़ी आशा, इच्छा और उम्मीद होती है, उतनी ही बड़ी निराशा होती है। परन्तु एक छोटी सी दुघटना भी बेचैनी और कडवी निराशा को पैदा कर सकती है जो आगे बढ़कर अधिक गम्भीर समस्या बन सकती है, अगर उसका सामना जल्दी और सही रूप से न किया जाए तो।

छोटी लोमडियाँ जो दाख की बारियों को बिगाड़ती है

जो लोमड़ियाँ दाख की बारियों को बिगाड़ती है, उन्हें पकड़ ले...।

श्रेष्ठगीत 2:15

छोटी निराशाएँ बेचैनी को उत्पन्न कर सकती है, जो बाद में और बड़ी समस्या में बदल सकती है, जो हमारे लिए बहुत बड़े नुक्सान कर सकती है।

बड़ी निराशाओं के बावजूद जो निराशाएँ तब होती है जब हमें नौकरी या और ऊँची पद पर नियुक्तियाँ जो घर हमें चाहिए, या वो न मिले तो हम छोटी छेड़छाड़ सही उतना उदास और बेचैन हो सकते है।

उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि दिन के खाने पर कोई आपसे मिलने वाला था और वो आने में अस्फल हो जाए। या मान लीजिए आप शहर के एक खास जगह या बाज़ार में किसी मॉल/दुकान से आप

कोई सामान छूट पर लेने गए हों, और जब आप वहाँ पहुँचे तो वो सामान पहले ही बिक गया हो। या मान लीजिए आप किसी खास मौके पर बढ़िया तरह से तैयार हो जायें और अचानक आखरी समय आप यह ध्यान दें कि आपका कपड़ा कही से थोड़ा फटा हुआ है।

दरअसल ये सब बातें तो एक दम छोटी बातें हैं, परन्तु ये सब भी जुड़ कर बहुत दुःख दे सकती हैं। इसलिए हमें यह मालुम होना चाहिए कि हम इन्हें कैसे सम्भाले और प्रत्यक्ष रूप से रखें। नहीं तो, ये हाथ से बाहर कहीं जायेंगी और इकटठा होकर ये सब ठीक मात्रा से भी बाहर हो जायेंगी। यह, बदले में, हमें एक गम्भीर समस्या में डाल सकता है, जब हम वास्तविक रूप से किसी चुनौती का सामना करेंगे।

आईए मैं आपको एक उदाहरण दूँ।

मान लीजिए कि आप अपने दिन को देर से शुरू करें और इसलिए आप पहले से ही परेशान हों। कार्यालय जाते हुए सड़क पर भीड़—भाड़ के कारण आपने जितना सोचा भी नहीं था उससे भी अधिक देर हो जाती है।

फिर जब आप अपने काम को शुरू करने जाते हैं तो यह पाते हैं कि नौकरी वाले स्थान पर आपके पीठ पीछे कोई आपकी बुराई कर रहा था।

आप थोड़ी कॉफी लेने जाते हैं ताकि इससे आपको शांत होने में मदद मिले और अपने आप पर थोड़ा काबू पा ले, अचानक आप पूरी कॉफी अपने ऊपर गिरा लेते हैं—और आपके अधिकारी से एक महत्वपूर्ण मुलाकात हो और कपड़े बदलने के लिए आपके पास कोई समय न हो!

ये सब बातें एक के ऊपर एक इकट्ठा हो जाती हैं जब तक कि आप का वास्तविक रूप से शोरवा नही बन जाता है।

फिर ठीक उसी समय आपको डॉक्टर से ऐसी सूचना मिलती है जो आपकी आशाओं और प्रार्थनाओं से मेल नहीं खाती, और उसके ऊपर अगर आपकी मंगेतर का फ़ोन आता है और वह मंगनी तोड़ने की धमकी देती है जिसकी घोषण तो पहले ही पूरे संसार में हो गई थी।

उस समय आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी—विश्वास या क्रोध ?

यह सब छोटी परेशानियाँ और वह भीड़—भाड़, वह कानाफूसी और वह कॉफ़ी सब मिलकर आपको एक बड़ी मुश्किल के लिए तैयार कर देते हैं जबकि वास्तव में आपको गम्भीर समस्या जैसे बीमरी या कोई असफल रिश्ते का सामना करना होता है।

इसलिए हमें हमेशा उन छोटी लोमडियाँ जो दाख की बोरियों को नष्ट कर देती है, उनसे सचेत रहना चाहिए, क्योंकि ये सब मिलकर उतना ही नुक्सान पहुँचा सकती है जितनी की वो गम्भीर समस्याएँ जो ज्यादातर उनके साथ या उनके पीछे आती हैं, वे पहुँचाती हैं।

हमें वैसा करना सीखना चाहिए जैसा पौलुस ने प्रेरितों के काम में किया, जब एक सर्प उनके हाथ से लिपट गया तो—बस उन्होंने उसे झटक दिया ! (प्रेरितों 28:1-5)। अगर हम निराशा का सामना जल्दी से करने का अभ्यास कर लेंगे, तो हम विनाश के पहाड़ में नही इकट्ठा होंगे।

5

यीशु मसीह में दृढ़-निश्चय

हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

भजन संहिता 42:5

आपकी और मेरी आशा परमेश्वर में होनी चाहिए क्योंकि हमें यह नही पता कि जीवन में हमारे खिलाफ क्या आने वाला है।

बाइबल में बहुत सी जगह, उदाहरण के तौर पर 1 कुरिन्थियों 10:4 में यीशु को चट्टान के रूप में दर्शाया गया है। पौलुस प्रेरित कुलुस्सियों 2:7 में यह बताते ही रहते हैं कि हमें उसमें जड पकड़ते और बढ़ते जाना है।

कहीं भी हमें यह नहीं सिखाया जाता है कि हम उन्य व्यक्ति में या अपनी नौकरी में या अपनी कलीसिया में या अपने मित्रों में यह स्वयं में जड़ पकड़े और बढ़ते जायें।

अगर हम अपनी जड़ो को यीशु मसीह रूपी चट्टान के चारों और ढाँपेंगे तो हम एक अच्छी अवस्था में रहेंगे। परन्तु अगर हम उन्हें किसी वस्तु या किसी और व्यक्ति के चारों ओर, ढाँपेंगे, तो हम समस्या में पड़ जायेंगे।

कुछ भी या कोई भी यीशु के सदृश मजबूत और भरोसेमंद और स्थिर नहीं हो सकता है। इसलिए मैं नही चाहती हूँ कि लोग मुझमें या मेरी सेवकाई में जड़ पकड़े और बढ़े। मैं लोगों को यीशु की ओर ही ले जाना चाहती हूँ। मुझे मालूम है कि आखिरकार किसी न किसी बात में मैं उन्हें निराश कर दूँगी, ठीक उसी प्रकार जैसा मुझे मालूम है कि वे भी मुझे अंत में निराश कर देंगे।

हम मनुष्यों के साथ यही समस्या है; हम हमेशा असफल हो सकते हैं।

परन्तु यीशु मसीह के साथ ऐसा नही हैं।

यीशु मसीह में जड़ पकड़े और बढे। अपनी सम्पूर्ण आशा को हमेशा के लिए उस पर रखें। न ही मनूष्य में, न ही परिस्थितियों में, नही अपने बैंक के खाते में, न ही अपनी नौकरी में, न ही किसी वस्तु पर या किसी व्यक्ति पर।

अगर आप अपनी आशा और विश्वास को अपने उद्धार के चट्टान पर नहीं रखेगे, आप निराशा की ओर बढ़ेगे, जो निरुत्साहन और विनाश की ओर हमें ले जाएगा।

लोग तो गलती करते हैं

विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा टूटे हुए दाँत या उखड़े पाँव के समान है।

नीतिवचन 25:19

कुछ समय पूर्व मेरी बेटी की शादी के लिए मंगनी हो गई थी। उसके लिए अंगूठी भी चुनी जा चुकी थी, पैसा भी बचा कर रखा था और विवाह की सभी योजनाओं को बना लिया गया था।

मांगनी की घोषण के बस थोड़े दिनों के पश्चात् ही सब कुछ खत्म करना पड़ा क्योंकि जो लड़का था वो अविश्वासी और बेईमान निकला।

यह तो वास्तव में एक बहुत दुःख भरी परिस्थिति थी, खास तौर पर उस प्यारी, अद्भुत, मधुर और जवान, होने वाली दुल्हन के लिए जिसने अपने छोटे से जीवन में ही अन्य कठिन निराशाओं का सामना किया था।

परन्तु इस बार जैसे कि उसने शैतान के ऊपर छलांग लगा ली। उदास और अपने दुःख महसूस करने कि बजाय उसने कहा, अच्छा हुआ, परमेश्वर का धन्यवाद कि मैंने शादी से पहले ही जान लिया कि वास्तव में वह कैसा आदमी था, न कि जीवन के रास्ते में तब पता चलता जब बहुत देर हो चुकी होती और उसके प्रति मैं कुछ भी नहीं कर पाती।

मुझे उस पर बहुत गर्व हुआ और मैं यह देखकर इतनी प्रसन्न हुई कि कैसे उसने इतनी बुरी निराश परिस्थिति को सम्भाल लिया।

हालांकि अच्छा हुआ कि शादी से पहले ही उसे यह पता चल गया बजाय कि बाद में पता चलता, वो तो फिर भी चोटिल हुई। इसलिए उसके पिता और मैंने उसको उत्साहित किया, उसको सलाह दी और उसके साथ प्रार्थना की।

इसके साथ में, वो मेरी कुछ शिक्षाओं के टेप को भी सुनने लगी और एसी पुस्तकों को पढ़ने लगी जो कि आत्मा को हियाव देते हैं और ऊपर उठाते हैं।

वो उस कठिन परेशानी और उस परखे जाने वाले समय से इसलिए निकल पायी क्योंकि उसका विश्वास और भरोसा किसी गलत मनुष्य पर नहीं परन्तु कभी न असफल करने वाले यीशु पर था। वह उसकी ओर निराशा और निरुत्साहन में निरन्तर प्रयत्न करने वाले के रूप में एक उदाहरण के जैसे देखती रही। यही हम सब को करने के लिये सीखने की ज़रुरत है ।

आज उसका विवाह एक अदभुत व्यक्ति से हो चुका है, और वो और उसका पति दोनों ही हमारे साथ हमारी सेवकाई में काम करते हैं।

यीशु की ओर देखते रहें

...आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्ता (जो हमें हमारे विश्वास के लिए सबसे पहला प्रोत्साहन देता है) और सिद्ध करनेवाले (उसको परिपक्वता और सिद्धता तक) यीशु की ओर (उन सब बातों से परे जो हमें भटकाती

है) ताकते रहे, जिसने उस आनन्द (इनाम को प्राप्त करने का) के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनि ओर जा बैठा।

इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में (उसको यादद करें और अपनी परेशानियों के साथ उसकी तुलना करें) पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।

इब्रानियों 12:1-3

हिम्मत हारने और जीवन रुपी मार्ग के किनारे लेट कर यह कहने में कि मैं पीछे हट रहा हूँ, कोई विशेष गुण की आवश्यकता नही होती है। कोई भी अविश्वासी ऐसा कर सकता है।

आपको पीछे हटने के लिए एक मसीही होने की ज़रुरत नहीं है।

परन्तु यदि एक बार आप यीशु को थामें रहेंगे या यह और भी अधिक अच्छा होगा यदि वह आपको पकड़ ले, तो वो आपके अन्दर सामर्थ्य, शक्ति और हियाव को भरता जायेगा फिर आपके साथ कुछ अन्जानी और अद्भुत बात होने लगती है। वो आपको हटने नहीं देगा!

आप हो साकता है यह कहें, "ओहा, प्रभु बस मुझे आप अकेला छोड़ दीजिए। मैं अब ऐसे ही और नही रहना चाहता हूँ।" चाहे आप हिम्मत हारना चाहते हों परन्तु वो आपको ऐसा नहीं करने देगा।

मैं तो हिम्मत हार कर पीछे हटना चाहती थी। परन्तु अब जब मैं बिस्तर से उठती हूँ तो प्रत्येक दिन को ताजे और नए रुप से शुरु करती

हूँ। मैं अपने दिन की शुरुआत प्रार्थना और वचन को पढ़ने और वचन को बोलने तथा परमेश्वर की खोज करने से शुरु करती हूँ।

हो सकता है शैतान मेरे कानों में चिल्लाता रहे, "यह तो तुम्हारे लिए जरा भी अच्छाई को नही उत्पन्न करता है। तुम तो कई सालों से ऐसा करती आयी हो, और देखों तुम्हें अब तक बस परेशानी ही मिली है।"

ऐसे ही समय में मैं कहती हूँ "शैतान,चुप हो जाओ! बाइबल कहती है कि मैं यीशु की ओर देखूँ और उसके उदाहरणों का अनुसरण करुँ। वो ही मेरा अगुवा है, मेरे विश्वास का स्रोत और उसको पूरा करने वाला है।"

जो कुछ उसके साथ हुआ उसके बावजूद भी आगे बढ़ते रहने के लिए और अपनी आत्मा को उत्साहित रखने के लिए, ठीक यही मेरी बेटी ने भी किया था। वो अपनी बीती हुई "अच्छा, यह तो मेरे साथ फिर से हुआ है—और अधिक अस्वीकृति। यह एक बार हुआ, फिर दोबारा, और अब यह तीसरी बार मेरे साथ हो चुका है।" परन्तु फिर भी वो यीशु की ओर देखती रही।

आपको और मुझे आज इस निर्णय को लेना है, कि भले ही क्यों न कुछ भी आ जाये, हम तो निरन्तर आगे बढ़ते ही रहेंगे चाहे कुछ भी हो जाए।

पुनः आशावान हो जाइए

आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी (असम्य, ऊँचे दिमाग वाले, अलग) न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखोः अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

रोमियों 12:16

हाल ही में मैं सोच रही थी कि परमेश्वर ने मेरे जीवन और सेवकाई में क्या कुछ नहीं किया है। पीछे मुड़ कर जब मैं उन सब बातों की ओर देखती हूँ तो बहुत आश्चर्य होता है। परन्तु हमेशा सब कुछ आसान तो न था। कुछ ऐसे समय भी थे जब मैं एक दम हताश होकर सब कुछ छोड़कर पीछे हटना चाहती थी।

मैंने आपके साथ बाँटा है कि जब मैं निराश और निरुत्साहित हो जाती हूँ तो परमेश्वर मुझ से कहता है कि, "जॉयस, जब निराशा आती है, तुमहे पुन: आशावान होना चाहिए क्योंकि अगर तुम निराशा में ही पड़ी रहोगी तो, यह तुम्हें विनाश की ओर ले जायेगा।"

इसीलिए हमें दूसरी दिशा अपनाने को, ढालना और उसमें रहना सीख लेना चाहिए। यही मेरी बेटी ने भी किया था जिसके कारण उसे पूर्ण शुरू से एक नया और बिल्कुल फर्क जीवन प्राप्त हुआ।

निश्चय ही, हमेशा तो यही करना आसान नहीं होता है बारिश के कारण पिकनिक में न जाने से अपने को सम्भालने से कहीं अधिक कठिन एक टूटी मंगनी के बाद अपने को सम्भालना होता है। यह मायने नहीं रखता कि आपको कौन सी परिस्थितियों का सामना करना पड़े, पर उत्तर तो हमेश एक ही होता है।

जब तक हम पुनतः आशावान होकर अपने आप को उस परिस्थिति के अनुकूल ढाल कर एक नयी दिशा को पाना न सीख लें, हम उस अद्‌भुत और उत्तसाहपूर्ण जीवन को कभी नहीं खोज पायेंगे न ही उसका आनंद उठा पायेंगे जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है।

6

परमेश्वर की बातों पर मनन करें

किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे (निश्चित) निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ !

तब परमेश्वर की शान्ति,(आत्मा की शांत स्थिति जो आपके प्राण का उद्धार मसीह के द्वारा किए जाने को निश्चय दिलाती है वह आपकी होगी; इसलिए परमेश्वर से किसी भी बात का भय न करें और तृप्त हो जायें उसके सांसारिक ढेर से चाहे वो किसी भी प्रकार की क्यों न हो, वो शांति), जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

फिलिप्पियों 4:6,7

अगर आप हताश निरूत्साहन के द्वारा नाश नहीं होना चाहते हैं तो फिर अपनी निराशाओं पर मनन भी न करें।

क्या आपको मालूम है कि आपकी भावनाएँ, आपके विचारों से जुड़ी हुई है ? अगर आप नहीं मानते हैं कि यह सच है तो, बस आप 20 मिनट या थोड़ा और समय ले जिस में आप अपनी समस्यावों के अलावा किसी दूसरे बारे में नही सोचेंगे। मैं आपको निश्चय दिलाती हूँ कि उस समय के अंत तक आपके चेहरे का भाव बदल जाएगा। हो सकता है आप निराश, क्रोधित या उदास हो जायें परन्तु फिर भी इसके द्वारा आपकी परिस्थिति में कोई बदलाव नहीं होगा।

इसलिए आप कलीसिया जाते हैं, गीत गाते हैं, प्रचार सुनते हैं फिर भी उसी नकारात्मक भाव और दृष्टिकोण से आप वापस जाते है जो तब भी था जब आप अपने घर से निकले थे। यह इसलिए होता है क्यों कि आप कलीसिया में बैठकर भी अपनी समस्याओं पर मनन करते रहे बजाय कि अपने मन और आत्मा को प्रभु पर केन्द्रित करें।

आप किसके साथ संगति करते हैं?

अपनी मासिक पत्रिका के एक विषय से संबधित, मैंने इस प्रश्न को पूछाः "क्या आप परमेश्वर के साथ संगति करते है या अपनी समस्याओं के साथ?"

जिस कारण वश मैंने अपने पाठकों से इस प्रश्न को पूछा था वो इसलिए कि ठीक यही बात एक सुबह परमेश्वर ने भी मुझसे पूछी थी।

उस दिन जब मैं सोकर उठी थी तो मेरा मन मेरी किसी समस्या के बारे में ही सोच रहा था। अचानक परमेश्वर कि आत्मा ने मुझेसे बात

की। उसकी आवाज़ के स्वर से ही मैं बोल सकती हूँ कि वो मुझसे थोड़ा बहुत नाराज़ थे।

उसने मुझसे कहाँ, "जॉयस, तुम अपनी समस्या से संगति करोगी या मुझसे?" फिर वह उसी बातों को कहता, गया जो मैं आपको बता रही हूँ, "अपनी निराशाओं पर मनन न करें।"

जब आप निराश हो जाते है, केवल बैठकर अपने प्रति दुःख महसूस न करें क्योंकि आप जैसा सोच रहे हैं उसके बावजूद भी आप किसी और से बिल्कुल भी अलग नही हैं।

कभी–कभी यह मानने में हमें थोड़ी कठिनाई होती है क्योंकि शैतान हमेशा हमें यह महसुस कराना चाहता है कि केवल हम ही हैं जिसके साथ कभी दुर्घटना हुई हो।

परन्तु यह सत्य नही हैं।

एक समय मैंने अपनी बेटी को बहुत उत्साहित किया क्योंकि मैं उसके साथ बैठ गई और मैंने उससे अपने जीवन की उन बातों को बाँटा जो मेरे साथ 18 वर्ष की आयु से 23 वर्ष की आयु तक घटी थी। मेरी बात पूरी होने से पहले ही, वो वास्तव में अपने जीवन में आशीषित महसूस करने लगी।

सभी लोगों के समान, उसके साथ समय दर समय कुछ बहुत ही अभागी बातें हुई है, परन्तु कई सालों - सालों तक मेरा जीवन एक लम्बे भयंकर विनाश में था।

उदाहरण के तौर पर, मैंने उसे उस समय के बारे में बताया जब मैं 18 या 19 वर्ष की थी और मैं ओकलैंड, केलीफॉर्निया, में अपने घर से

तीन हज़ार मील की दूरी पर एक कमरे वाले घर में बैठी रहती थी जहाँ न कोई गाड़ी थी, न टेलीविज़न था, न फोन था और न मेरी देख रेख के लिए कोई था। मैंने उसको बताया कि कैसे मैं प्रत्येक रात को वहाँ बैठती थी और अपने प्रति दुःख महसूस करके दुःखभरी कविताओं को लिखती थी और फिर अगली सुबह उठकर पैदल काम पर जाती थी।

"परमेश्वर का धन्यवाद करो कि तुम्हारे पास एक अच्छा परिवार है, एक अच्छी नौकरी, एक अच्छा घर और एक अच्छी गाड़ी है!" मैंने उसको बताया, "क्योंकि मेरे पास इन में से कुछ भी नहीं था।"

जब तक मैंने उसको मेरी जीवन कथा सुनानी खत्म की, वो अपनी वर्तमान परिस्थिति और उज्जवल भविष्य के बारे में सोचकर उत्साहित हो गई।

यही चुनाव हम सब के पास भी है। हम यह सोचकर उत्साहित हो सकते हैं कि हमारे पास क्या है और क्या हो सकता है, या हम यह सोचकर निराश हो सकते हैं कि हमारे पास क्या कुछ नहीं है।

सच्चाई तो यह है, अगर हमारे पास कुछ नहीं है, तो बस नहीं है; और खाली बैठकर अगर हम कामना करें तो इससे कुछ भी नही बदलेगा। हम तो यह कामना करेंगे कि ऐसा हो जाए, परन्तु ऐसा होता नही हैं।

अगर हम निराश पर जय पाना चाहते हैं और निरूत्साहन से बचना चाहते हैं जो हमें विनाश की और ले जाता है, हमें वास्तविक होकर सच्चाईयों का सामना करना चाहिए।

सच्चाई तो यह है, चाहे सब कुछ कितना ही बुरा क्यों न प्रतीत होता हो, हमारे पास फिर भी एक चुनाव है! हम या तो अपनी समस्याओं के साथ या अपने परमेश्वर के साथ संगति करने का चुनाव कर सकते हैं।

यह नहीं मायने रखता कि हमने क्या खो दिया है या हमें कितना बुरा महसूस होता है, हमारे पास फिर भी अपने विचारों को नकारात्मक से सकारात्मक दिशा की ओर से जाने की योग्यता है।

इन बातों पर मनन करें!

> इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य है, और जो जो बातें आदरणीय है, और जो जो बातें उचित है, और जो जो बातें पवित्र है, और जो जो बातें सुहावनी है, और जो जो बातें मन भावनी है, अर्थत् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन पर ध्यान (अपने मन को केन्द्रित किया करों) लगाया करो।
>
> फिलिप्पियों 4:8

इस परिच्छेद के 6 और 7 पद में हमें बताया गया है कि अगर हमारे पास कोई समस्या है तो हमें चिन्ता नहीं करनी है न ही चिड़चिड़ाना है परन्तु सब बातों को प्रार्थना में परमेश्वर के पास ले जाना है। हमको यह दिलासा दी गई है कि अगर हम यह करेंगे तो परमेश्वर की शांति हमें भय और बेचैनी से दूर रखेगी तथा हमारे मन और हृदय की सुरक्षा करेगी।

परन्तु यहाँ 8 पद में हम देखते हैं कि हमें परमेश्वर की शांति और अदभुत आनंद को ग्रहण करने के लिए कुछ और भी करने की आवश्यकता है। हमें अपने विचार–धाराओं के जीवन पर नियंत्रण बना कर हमें अपने मन को नकारात्मक से सकारात्मक की ओर ले जाना चाहिए।

अब आप यहाँ पर ध्यान दीजिए कि हमें यह बताया गया है कि सबसे पहले हमें उन बातों को सोचना है जो सत्य है। इसका यह मतलब नहीं कि हम उन बीती हुई बुरी घटनाओं को सोचते रहें जो कि हकीकत में हमारे साथ हुई थी।

सत्य और यथार्थ के बीच एक अन्तर है। जो बातें अतीत मे हुई वे यथार्थ है, परन्तु यीशु और उसका वचन सत्य है, और ये यथार्थ से भी अधिक बड़े हैं।

आइए अपनी एक सहेली के जीवन से मैं आपको एक उदाहरण देकर इस बात को समझाऊँगी।

कुछ समय पूर्व इस सहेली के पति की मृत्यु हो गई और वह अब परमेश्वर के साथ है। वो तो स्वर्ग में है, और जब तक मेरी सहेली वहाँ पहुँचेगी नही तब तक वो उनसे दोबारा नही मिल पायेगी।

यह तो एक यथार्थ बात है।

परन्तु सच्चाई यह नही है कि मेरी सहेली का जीवन समाप्त हो गया है। अब उसके पास कोई नहीं है जिसके लिए वो इस जीवन को जिये। शैतान तो चाहेगा कि वो इस बात पर विश्वास कर ले, परन्तु यह ऐसे नही है।

यथार्थ में वो नौवजवान जिससे मेरी बेटी की मंगनी हुई थी उसने उससे झूठ बोला था और उसको गहरी चोट पहुँचाई थी। परन्तु सच्चाई तो यह है कि उस निराशा के साथ ही उसका जीवन नहीं समाप्त हो गया। सच्चाई तो यह है कि अभी भी उसके आगे उसका पूरा जीवन पड़ा था और वो बहुत आशीषों से भरा था।

यथार्थ तो यह है कि उसने एक मंगेतर को खो दिया था, परन्तु सत्य तो यह है कि उसके पास अभी भी एक भविष्य था, एक अच्छी मसीही घर और परिवार था, उसकी अपनी गाड़ी थी एक अच्छी नौकरी थी, देख - रेख करने वाले मित्र थे और परमेश्वर का प्रेम था।

जो सदमा था वो ठीक उसके उन्नीसवें जन्मदिन से पहले हुआ था। वो तो एक जन्म दिन तोहफे के समान ही था, क्या ऐसा नही? परन्तु दुःख और कड़वाहट से करने की बजाय, उसने एक भिन्न दृष्टिकोण और तरीके को अपनाया।

उसने कहा, "कल मेरा उन्नीसावाँ जन्मदिन है और जहाँ तक यह मुझसे संबधित है यह मेरे बाकी जीवन का प्रथम दिन है !"

मैं उसकी प्रतिक्रिया और दृष्टिकोण से इतना प्रभावित हो गयी कि मैं ने उसको एक छोटी डायरी लाकर दी और उससे कहा, "इस छोटी पुस्तक में उन सारे चमत्कारों को लिखना जो परमेश्वर तुम्हारे आने वाले साल में करने जा रहा है तुम्हारे बीसवें जन्मदिन पर हम लोग इसको पढ़ेंगे और साथ में मनायेंगे।"

ठीक यही हमने किया भी।

यही आपको और मुझे भी करना चाहिए। हालांकि हमारे पास हमेशा यह सामर्थ्य नही होती कि हम निराशाओं को घटने से रोक दें, हमारे पास तो यह सामर्थ्य है कि यह चुन सकते हैं कि हमें कैसी प्रतिक्रिया करना चाहिए।

हम अपने विचारों को उन पर मनन करने की अनुमति दे सकते हैं जब तक कि हम पूर्ण रूप से निरूत्साहित और नाश न हो जायें, या हम अपने ध्यान को उन सब अच्छी बातों पर केन्द्रित कर सकते हैं जो हमारे जीवन में घटी थी—और उन सब अच्छी बातों पर भी जो आने वाले दिनों में परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है।

7

आशा और उम्मीद

(मेरा दृढ़ उद्देश्य है कि) मैं उसको प्रगतिशील रूप से अधिक गहराई और नजदीकी से जान सकूँ उसके व्यक्तित्व की अदभुत बातों को और सामर्थ्यशाली और स्पष्ट रूप मे भाप सकूँ और पहचान सकूँ और उसके मृत्युंजय की सामर्थ (जो वो अपने विश्वासियों को देता है) की, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानू, और उसकी मृत्यु की समानता (और आत्मा की समान्ता) को प्राप्त करूँ।

फिलिप्पियों 3:10

इस पद में पौलुस ने कहा है कि उसने कुछ किया है जो समझती हूँ हम सब को करना चाहिए। उसने अपने लिए एक लक्ष्य को निर्धारित किया था।

आपके और मेरे पास एक लक्ष्य होना चाहिए। हमारे पास जीवन में एक आशा, दिशा और उम्मीद होनी चाहिए।

कभी कभी जब कुछ लोग बार–बार, निराश हो जाते हैं तो वो एक दिशा और उम्मीद को खो बैठते हैं। वे अपनी आशा को किसी वस्तु में या किसी व्यक्ति पर इसलिए नहीं लगाते हैं क्योंकि उन्हें भय होता है कि वे फिर निराश हो जायेंगे। वे निराश के दर्द से इतना धृणा करते हैं कि वे कभी किसी पर भरोसा नहीं करते हैं और दोबारा चोटिल होने के खतरे को बिल्कुल भी मोल लेना नही चाहते हैं।

दुःख की बात यह है कि जीवन के खेल में वे ही हारते हैं और विजयी नही होते हैं क्योंकि जय तो तभी आती है जब हम कोई खतरा उठाते है।

चोट से शंका पनपती है

> कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से (यहाँ तक कि शरीर मे रहते हुए भी आत्मिकता और नैतिकता में) जी उठने के पद तक पहुँचूँ।
>
> फिलिप्पियों 3:11

जब एक लड़की उस लड़के के द्वारा जिसकी वो बहुत खयाल करती है, उससे दो या तीन बार चोटिल हो जाए तो वह सोचती है, "मैं दोबारा कभी किसी और पर भरोस नही करूँगी।"

शैतन हम सब से यही करवाना चाहता है।

यदि मेरे और आपके ऐसे मित्र हों जो हमें गिराते हों तो शैतान चाहता है कि हम कहें, "क्ऐसा ही होता है, मैं अब कभी किसी पर विश्वास नहीं करूँगा।"

जब हम ऐसा करते है, तो हम ठीक शैतान के हाथों में जाते हैं।

किसी ने एक बार कहा, "अगर तुम्हें चोट लगती है, तुम शंका में पड़ जाते हो।"

यह सत्य तो हो सकता है, परन्तु यह तो बस शत्रु की दूसरी चाल हो सकती है जिसके द्वारा वो हमें धोखा देना चाहता है और हमारे जीवन के लिए परमेश्वर का जो लक्ष्य है उस तक पहुँचने से हमें दूर रखता है।

शैतान हमें यह विश्वास दिलाना चाहता है कि सब कोई उन्हीं के समान है जिन्होंने हमें निराश किया है।

परन्तु वे वैसे नहीं होते हैं।

शैतान हमेशा कुछ बुरे अनुभवों को लेकर हमें यह कायल करने की कोशिश करता है कि हमें जीवन में कभी किसी पर भरोसा नही करना चाहिए।

यदि आपको बुरा लगा हो, तो यह सोचना प्रारंभ न करें कि आप किसी पर भरोसा नहीं कर सकते। यदि आप बुरा मानते हों तो आप शैतान को अपने में से परमेश्वर की बहुत सी बड़ी आशीषों को चुराने देते हैं।

पौलुस प्रेरित के पास एक लक्ष्य था, एक आत्मिक स्वप्न। वो उस स्तर तक पहुँचना चाहते थे जहाँ ये मायने नहीं रखता कि जीवन में भले ही क्यों न कुछ हो जाए, उससे उन्हें कोई फर्क न पड़े या उन्हें इस सांसारिक जीवन में परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्देश्य की पूर्ति की भरपूरी से कुछ भी बात दूर न कर सके।

उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उनको कई खतरे उठाने पड़े। न केवल उन्हें परमेश्वर पर भरोसा रखना पड़ा बल्कि अन्य लोगों पर भी भरोसा

रखना पड़ा। उन्हें अपने लोगों पर भी भरोसा रखना पड़ा। उन्हें अपने जीवन में हानि और नुक्सान के खतरों को झेलने के लिए तैयार होना पड़ा।

इसी प्रकार आपको और मुझे भी करना है। शत्रु चाहे हमारे मार्ग में क्या कुछ न करें हमें निरूत्साहित करने के लिए ताकि हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही हार मान लें और बीच में ही पीछे हट जाए, इन सब बातों के बावजूद भी हमें निरन्तर आगे कदम बढ़ाते ही रहना चाहिए।

आगे बढ़ते ही रहे!

> यह मतलब नहीं, कि मैं (इस ध्येय को) पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये (अभिषिक्त) मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।
>
> हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम (जो मेरा एक ही लक्ष्य है) करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को मूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह (श्रेष्ठ और स्वर्गीय) इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।
>
> फिलिप्पियों 3:12-14

12 पद में पौलुस कहता है कि हालांकि अभी तक वह अपने लक्ष्य तक नही पहुँचा है या अपने ध्येय को प्राप्त नही किया है, वो पीछे हटकर उसको छोड़ने की बजाया आगे ही बढ़ता रहेगा।

फिर 13 पद में वह बताता गया है कि एक काम है जिसको वो करता है।

यह एक काम हमारे लिए भी रूचिकर और महत्वपूर्ण होना चाहिए क्योंकि यह बात उस व्यक्ति की और से आती है जिसने पवित्र आत्मा के प्रकाशन के द्वारा नए नियम में दो–तिहाई से भी अधिक पुस्तकें लिखी है।

वो एक सिद्धान्त कौन सा था जिसके द्वारा महान प्रेरित पौलुस अपने जीवन में कार्य करते थे जिसके द्वारा वो मानते थे कि उनके स्वप्न तथा लक्ष्य पूर्ण हुए है ?

इस सिद्धान्त के दो भाग हैः सबसे पाहली बात यह है कि हमें उन बातों को भूलना है जो बीत गयी है, और दूसरी बात यह है कि हमें उन बातों को और निरन्तर आगे बढ़ते रहना है जो हमारे भविष्य में होने वाली है।

यह हम सब के सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है।

उदाहरण के तौर पर, उस स्त्री के बारे में सोचें जिसने अपने पति को खो दिया है। जब हम यह कहते हैं कि उसे उन बातों को भूल जाना चाहिए जो कि बीत गयी है और निरन्तर उन बातों के लिए आगे बढ़ते रहना चाहिए जो कि भविष्य में होने वाली हैं, हम उसको यह सलाह नहीं दे रहे कि उसे अपने पति के बारे में सब कुछ भूल जाना चाहिए और कभी उसको याद नही करना चाहिए। हम तो बस यह कह रहे हैं कि अगर वो अपने मन को बहुत ज्यादा अपने पुराने जीवन पर केन्द्रित करेगी तो यह उसको परेशानी में डाल देगी। अपने भविष्य की बातों के लिए निरन्तर आगे बढ़ने कि बजाय वो तो बस अपने अतीत में ही रहेगी।

मुझे उस स्त्री की याद आ रही है जो मेरी कलीसिया की थी जिसका बेटा सोलह साल की आयु में ही ल्युकीमिया के रोग से मर गया था। हम सब ने उसके लिए प्रार्थना की थी और विश्वास किया था कि परमेश्वर उसको चंगा करेगा, परन्तु ऐसा नही हुआ; वो फिर भी परमेश्वर के साथ

होने को चला गया। इस हानि के मध्य भी परमेश्वर ने इस जवान माँ को सँभाला।

उसके मरण की स्मरण सभा के एक दिन पश्चात, जब वो कपड़े धो रही थी तो उसे अपने बेटे की एक कमीज मिली। जैसे ही उसने उसे उठाया और सीने से लगाया, वो फूट–फूट कर रोने लगी। उसने बताया कि उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे दुःख उसके उपर हावी हो रहा हो।

उसने जैसे ही महसूस किया कि उसके साथ क्या हो रहा है, वो अचानक यीशु के नाम को बोलने लगी। अपने पुत्र की एक कमीज को पकड़ कर उसने साहसपूर्ण यह घोषणा की "शैतान, इसको देखो, मैं इसको एक स्तुति के वस्त्र के रूप में इस्तेमाल करूँगी। मैं शोक में नही डूबूँगी वरन् स्तुति में ऊपर ऊँठूगी!"

अतीत में जो हुआ उसके लिए शोकित होन तो स्वभाविक है, परन्तु केवल एक स्तर तक और केवल कुछ ही समय तक। जल्द या देर से हमें अपने शोक और हानि पर काबू पा लेना चाहिए और उसे अपने पीछे कर के जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

पौलुस हमारी असिद्धताओं के बारे में बात करता है जब वो हमसे कहता है कि हम उन बातों को भूल जायें जो कि पीछे छूट गयी है और जो आगे आने वाला है उसकी ओर बढ़ते रहें, परन्तु इस सिद्धान्त को हम अपने सम्पूर्ण जीवन में लागू कर सकते हैं।

जिस कार्य के लिये परमेश्वर ने हमें, बुलाया है और अभिषिक्त किया है और आज्ञा दी है, अगर हम उसको अपने इस जीवन में पूरा करना चाहते है और उसको प्राप्त करना चाहते हैं तो पौलुस की तरह हमारा भी एक लक्ष्य होना चाहिए जिसकी ओर हम निरन्तर बढ़ते ही रहें।

8

एक नई बात

अब बीती हुई घटनाओं का (तत्परता से) स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।

देखो, मैं एक नई बात करता हूँ, वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा।

यशायाह 43:18,19

अतीत से सामना करते हुए, जिस खतरे को हमें दूर रखना चाहिए वो यह है कि हमें उन बीती हुई बातों को अनुमति नहीं देनी चाहिए कि वो हमें सदा शोक में ही रखें बजाय कि जो कुछ है उन बातों के लिए हम धन्यावादी हों तथा जो कुछ आगे आने वाला है उसके लिए आशा रखें।

अपनी सेवकाई को शुरू करने के लिए मुझे अपनी कलीसिया के सहयोगी पासवान की पदवी को त्यागना पड़ा। ऐसा करना मेरे लिए एक कठिन कार्य था और एक बहुत लम्बे समय तक मैं यह शोक मनाती थी कि मुझे उस कलीसिया के लोगों से दूर होना पड़ा और जो कार्य हम मिलकर करते थे उसमें अब मेरा कोई हिस्सा नहीं था।

आगे बढ़ते रहने के लिए मुझे अतीत की बातों को छोड़ना पड़ा परन्तु मेरा मन और मेरी भावनाएँ उनसे जुडी रहने की कोशिश करती थी। आखिरकार मैंने उस विजय को हासिल कर ही लिया। मैं भविष्य की बातों के लिए उत्तेजित तो हो गई परन्तु उस समय भी मैं अपनी उस पदवी और नजदीकी लोगों के संबंध को खोने के कारण निराश भी हुई।

जो निराश थी वो मेरी नयी सेवकाई के आनंद पर बहुत ही बुरा प्रभाव डाल रही थी। यह मेरे लिए एक गड़बड़ी का समय था, परन्तु इससे गुजरने के पश्चात् मैंने इस बारे में बहुत कुछ सीखा कि कैसे हमें अपनी पुरानी बातों को पीछे छोड़कर आगे वाली बातों के लिए निरन्तर आगे ही बढ़ते रहना चाहिए।

बार बार परमेश्वर मुझे यह याद दिलाता है, "तुम्हें उन बातों को छोड़ना है जो पीछे रह गयी है। अतीत अब तुम्हारा जीवन नहीं है। अब मैं एक नए काम को कर रहा हूँ।"

मैं हूँ!

परम्मेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना," जिसका नाम मैं हूँ उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।

फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना," तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देखा, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।

निर्गमन 3:14,15

अगर आप और मैं बहुत लम्बे समय तक अतीत की बातों पर ध्यान लगायेंगे तो हम मुशिकल में पड़ जायेंगे। इसलिए, समय दर समय परमेश्वर हमें यह याद दिलाता है, जैसा उसने मूसा और इस्राऐलियों को याद दिलाया, कि जो मैं हूँ सो हूँ, ये नहीं कि मैं जो था सो था।

हमें उन सब अच्छी बातों को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए अतीत में किए थे, ठीक उसी प्रकार जैसा उसने अब्राहम, इसहाक, याकूब और बाइबल के अन्य विश्वास योग्य स्त्री–पुरूष के लिए किए थे, परन्तु हमें अतीत के आनंद और विजय की बातों से इतना अधिक लगाव नहीं रखना चाहिए कि हम उन बातों की सराहना करने और उनका आनंद उठाने में चूक जायें जो परमेश्वर वर्तमान में हमारे साथ कर रहा है–और जो कुछ भविष्य के लिए उसने हमारे लिए संजो कर रखी है।

यूहन्ना 8:58 में हम पढ़ते हैं, "यीशु ने उनसे कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूँ; कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।" इब्रानियों 13:8 हमें यह बताता है कि "यीशु मसीह (जो मसीहा है वो) कल और आज और युगानुयुग एक सा है।"

ठीक इसी प्रकार अभी हमारा विश्वास होना चाहिए हमेशा एक सा, अनंत, समय के साथज्ञ खत्म न होने वाला और कभी न बदलने वाला।

पीछे मुड़ कर न देखें!

> यीशु ने उस से कहा; कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे (की बातों को मुड़कर) देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।
>
> लूका 9:62

परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम अतीत में रहें। वो यह जानता है कि यदि हम पीछे जा भी सकते और पुनः उन सब बातों को ठीक उसी प्रकार रच भी देते जैसे कि वो बीते हुए दिनों में थी, तो भी वो सब बातें एक समान न होती। आपको मालुम है क्यों ? क्योंकि वो तब थी, और ये आज है।

कल बीत गया है; वो समय के अंतः काल में खो चुका है। ये आज है। हमारे पास अभी का परमेश्वर है। हम अभी के कली लोग हैं, और हमें अभी का जीवन व्यतीत करना चाहिए —एक दिन एक बार में।

बहुत बार लोग अपने आनंद को खो बैठते हैं क्योंकि अतीत में जिस कारण वे आनंदित होते थे वो अब उनके पास नहीं है। बहुत लोग परमेश्वर के उस चलन के लिए लालायित रहते हैं जो था, परन्तु अब और नही है।

यह तो बहुत खराब बात है कि ऐसा अब नहीं होता है, और ऐसा कुछ भी नहीं जो आप और मैं इस बारे में कर सकते हों । हमें तो वर्तमान में रहना चाहिए। परमेश्वर अब भी चलन कर रहे हैं—आइए हम अभी ही आनंदित हो जायें।

हमें अतीत को अपने पीछे करलेना चाहिए और जो कुछ परमेश्वर हमारे जीवन में कर रहा है उन बातों के द्वारा हमें उन क्षणों से आगे बढ़ते ही रहना चाहिए जिसमें हम अभी हैं

परमेश्वर का धन्यवाद कि हम निरन्तर उन बातों की ओर बढ़ सकते हैं जो उसने हमारे लिए संजो कर रखी है। परन्तु साथ ही साथ हमें हल पर अपने हाथ को रखना है और उन बातों की ओर मुड़कर नहीं देखना है जो अभी थी फिर दोबारा कभी होगी भी नहीं।

पीछे मुड़ना या आगे बढ़ना?

जो ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं कि स्वदेश की खोज में है।

और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था।

पर वे एक उत्तम अथार्त् (एक) स्वर्गीय देश के अभिलाषी है; इसी लिये परमेश्वर उनका परमेश्वर (अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर) कहलाने से उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है।

इब्रानियों 11:14-16

यह परिच्छेद उन इस्राएलियों को सम्बेधित करता है जिन्हें अपने पहले देश से बाहर निकलान पड़ा और उन्हें काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा अपने नए देश तक पहुँचने के लिए कई ऐसे समय से गुजरना पड़ा जिसमें उनकी बहुत परख हुई।

यहाँ पर बताया गया है कि अगर वे केवल अपने उस घर की सुधि लेते रहते जिसे उन्होंने अभी छोड़ा था, उनके पास बहुत अच्छा अवसर होता कि वे वापस वहाँ लौट जाते। परन्तु वे तो एक नए स्वदेश, ऐसा देश जिसे परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है, की खोज में थे, इसलिए वे बाधाओं और मुश्किलों के बावजूद भी निरन्तर आगे ही रहे।

इसी चुनाव को आपको और मुझको भी करना चाहिए। हम अपने घर की याद करके पीछे मुड़ने का चुनाव कर सकते हैं, या हम उस आनंद की आशा के साथ आगे देखने का चुनाव कर सकते हैं जो आने वाला है।

इस परिच्छेद से यह तात्पर्य नहीं कि हमें कभी अपने अतीत की अच्छी बातों को स्मरण नही करना चाहिए या हमारे प्रिय जन जो हमें छोड़कर चले गए हैं उनका स्मरण नही करना चाहिए। इसका बस ये मतलब है कि हमें अपने मन और हृदय को निरन्तर पीछे अतीत की ओर केन्द्रित करके नहीं रखना चाहिए, क्योंकि अगर हम ऐसा करते हैं तो हम उन बातों को खो देंगे जो परमेश्वर ने हमारे भविष्य के लिए रखी है।

इसीलिए हमें एक प्रतिज्ञा करनी है कि हमे पीछे मुड़कर देखने में अपने जीवन को बर्बाद नहीं करेंगे और यह कि हम निरन्तर उन बातों की ओर आगे बढ़ते रहेंगे जो हमारे सामने है।

यह *आज* का संदेश है। यह कुछ ऐसा है जो हम आज और जीवन के प्रत्येक नए दिवस में करसकते हैं और हमें करना भी चाहिए।

मैं सोचती थी कि वचन जिसमें अतीत की बातों को भूलने के बारे में बताया गया है वो केवल हमारी पिछली गलातियों ओर असफलताओं

के लिए ही लागू होता है। फिर एक दिन मैंने यह महसूस किया कि मैं निरन्तर अपनी बीती हुई जयवंत और सफल बातों को याद करके बहुत दयनीय महसूस करती थी।

जब एक बात समाप्त हो जाती है, तो हमें उस पर पर्दा गिरा देना चाहिए अगली बात की ओर बढ़ना चाहिए तथा दोनों बातों मे कोई तुलना नहीं करनी चाहिए। हमें वर्तमान की गलतियों या जयवंत बातों की तुलना अतीत की गलतियों या जयवंत बातों से नहीं करनी चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे, हम या तो अपने आप को निरूत्साहन या घमंड़ के लिए खोल देंगे।

हम अपने वर्तमान जीवन में जिन बातों का अनुभव करते हैं उन में हमें पूर्ण रूप में जिन बातों का अनुभव करते हैं उनमें हमें पूर्ण रूप से आनंद उठाना चाहिए। हम ऐसा तब कर सकते हैं जब हम अनुभवों या जीवन के कुछ हिस्सों की तुलना अतीत से नहीं करेंगे।

इसलिए परमेश्वर ने यशायाह 43:18,19 में बताया है कि हमें पिछली बातों को न तो स्मरण करनाी चाहिए और न ही बीती हुई बातों पर ध्यान देना चाहिए अगर हम उसके एक हिस्सा बनना चाहते हैं और उससे फायदा उठाना चाहते है।

आँसूओं से बोयें, आनंद से काटें

जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे।

भजन संहिता 126:5

यह मायने नहीं रखता कि अतीत में हमारे साथ क्या हुआ था या अभी हमारे साथ कया हो रहा है, हमारा तो अभी समाप्त नहीं हुआ है। शैतान हमें इस बात को कायली कराने न पाए कि हमारा जीवन तो समाप्त हो गया है।

शैतान हमें यह बताने की कोशिश करेगा कि एक गलती को हमने बहुत बार दोहराया है और अब हमारे लिए बहुत देर हो चुकी है।

हमें उसकी बातों को नही सुनना है। बदले में, हमें उसको यह बताना है, "शैतान, तुम झूठे हो और हर प्रकार के झूठ के पिता हो। यह एक नया दिन है, और मैं एक चमत्कार की उम्मीद कर रही हूँ।"

जिस कारण हम जीवन को एक चमत्कार प्राप्ति की उम्मीद से बिताते हैं वे इसलिए कि हमें तो यह नही पता होता है कि चमत्कार कब हो जायेगा।

शैतान चाहेगा कि हम सोचें कि हमारा समय कभी भी नहीं आयेगा और कभी भी हमारे लिये आश्चर्य कर्म नहीं होगा। परन्तु यदि हम स्वयं को यीशु मसीह में स्थापित और जड़ पकड़ने देते हैं। परन्तु यदि हम यीशु मसीह में जड़ पकडेंगे और बढ़ते रहेंगे तो आखिरकार हमारा भी समय आ जायेगा और हमारा चमत्कार भी जो जाएगा।

परन्तु इसके लिए हमें तैयार रहना है। ऐसा करने के लिए हमें शैतान को दूर रखना है कि वो हमें इतना निरूत्साहित न कर दे कि हम सब कुछ छोड़कर पीछे हट जाए। अगर हम पीछे हटेंगे तो यह नहीं मायने रखता कि परमेश्वर की हमारे लिए कोई भी योजना क्यों न हो, वैसा नहीं होगा।

इस कारण पूरे बाइबल में से परमेश्वर हम से कहता है कि हमें न तो निराश होना है या निरूत्साहित होना है या सब कुछ देना है, क्योंकि वो जानता है कि हालांकि "रात को रोना पड़े," परन्तु सवेरे आनंद पहुँचेगा। (भजन संहिता 30:5)

परमेश्वर अपने कार्य को पूरा करेगा

मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के (आगमन) दिन तक पूरा करेगा।
फिलिप्पियों 1:6

परमेश्वर कभी भी किसी ऐसे कार्य की शुरूआत नही करता है जिसको वो पूर्ण करने की इच्छा नही रखता हो। वो ही कर्त्ता और सिद्ध करने वाला है। (इब्रानियों 12:2)

समस्या कभी परमेश्वर नही है परन्तु ये हम हैं। हम अपने अतीत में ही फँसे रहते हैं, पुरानी बातों में, इसलिए जिन बातों को परमेश्वर इधर - उधर करते रहते हैं उनको हम समझकर उन बातों का ख्याल नही करते हैं। जिस कारण वश हम नयी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं वो इसलिए क्योंकि हम अभी भी पुरानी बातों पर ही लटके रहते हैं, क्यों न वो कितनी ही अच्छी बात हो।

कल प्रभु ने हमारे लिये जो कुछ किया वह अद्‌भुत था परन्तु वह आज और कल भी हमारे लिये ऐसा करने की सामर्थ्य रखता है।

अपने आप से हमें जो प्रश्न पूछना चाहिये वह यह हैं: हम क्या चाहते हैं? पुरानी बातें या फिर नई?

9

नये दाखरस, नये मशकों

उसने एक और दृष्टान्त भी उनसे कहा: "कोई मनुष्य नये वस्त्र में से फाड़कर पुराने वस्त्र में पैवन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैवन्द पुराने में मेल भी नहीं खाएगा। और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नष्ट हो जाएँगी। परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिये।"

लूका 5:36-38

हाल ही के वर्षों में प्रभु ने मुझे इस पूरे भाग की एक नई समझ दी है।

मैं सोचती थी कि ये बात केवल अनुग्रह के द्वारा उद्धार जो नियमों का पालन करके होता है। अब मैं देखती हूँ की ये बात उन लोगों के नए जीवन शैली और विचार धारा पर लागू होती है जो मसीह यीशु में नयी सृष्टि बन गए हैं।

आप और मैं हमेशा कुछ नया पाना चाहते हैं परन्तु फिर भी पुरानी बातों को थामें रहते हैं यीशु मसीह कहते हैं कि यह तो सम्भव नही है। आपकी बात का उल्लेख करने के लिए वे एक कहावत बताते हैं कि हमें पुराने वस्त्र में नया पैबंद नही सिलना चाहिए या पुरानी मशको में नयी दाखरस को नहीं भरना चाहिए।

सिलाई वाली कहावत

जिस किसी को भी थोड़ा सिलाई का ज्ञान है तो उनको ये मालूम होता है कि हम किसी पुराने वस्त्र में नए पैबेद को नही सिल सकते है।

अगर आपके पास एक पुराना वस्त्र है जो धो-धोकर सिकुड़ गया हो और फीका हो गया हो, और अगर आप उसके किसी छेद पर नए कपड़े का पैबंद लगायेगे तो हर बार वो नया कपड़ा सिकुड़ जायेगा और उस पुराने वस्त्र से अलग हो जाएगा। अगर ऐसा नही भी होता है तो भी जो नया कपड़ा है वो पुराने कपड़े से मेल नही खाएगा क्योंकि वो नया कपड़ा तो अभी पुराना भी नही हुआ है और नही समय के साथ या धुलाई के द्वारा फीका पड़ा है।

कहावत के इस हिस्से में यीशु हमें बता रहें है कि हमें अपने नए जीवन को लेकर पुराने जीवन में पैबंद नही लगाने चाहिए। यह बस काम करेगा ही नही।

न ही पुरानी मशकों में नए दाखरस को डालना काम करेगा।

क्या उत्तम है?

कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नही चाहता क्योंकि वह कहता है कि पुराना ही अच्छा है।

लूका 5:39

आपको मालूम है कि क्यों एक व्यक्ति कहता है कि पुरान दाखरस नए दाखरस से उत्तम है? वो ऐसा उसी कारण से कहता है जैसे हम अपने पुराने जीवन को नए जीवन से अधिक पंसद करते है, क्योंकि पुरानी बातें ज्यादा आरमदेय होती है।

हम में से ज्याद लोग पुराने जीवन को नए जीवन की तुलना में अधिक पसंद करते है क्योंकि हम उसके आदि हो चुके होते हैं। हालांकि हमारा एक हिस्सा नए दाखरस, नयी बातों, नए दिन, नए चलन की इच्छा करता है और हमारा दूसरा हिस्सा पुरानी बातों पर ही लटका रहना चाहता है क्योंकि हम उन बातों के साथ ज्यादा आराम महसूस करते हैं।

परमेश्वर के साथ आगे बढ़ने की बजाय, हम वही रहने की कोशिश करते हैं जहाँ हम होते हैं क्योंकि ये हमारे लिए बहुत आसान होता है।

आगे बढ़ते रहना तो कठिन होता है।

किसी नए शहर में जाकर बसना कठिना होता है, नए दोस्त बनाना कठिन होता है, नया डॉक्टर या स्कूल या कलीसिया को ढूँढना कठिना होता है। (कभी कभी तो मेरे लिए एक नए स्थान में मेज - कुर्सी को ही लगाना कठिन हो जाता है।) जहाँ हम हैं बस वही रहना और केवल उन्हीं चीजों का आनंद उठाना और जानना जो हमारे पास होती हैं, हमें अधिक आर्कषक लगता है।

परन्तु जिस बात को हम भूल जाते हैं वो ये कि मसीही होने के नाते हम खुद नए बन चुके हैं।

नयापन आ गया है!

सो यदि कोई मसीह में (जुडा हुआ) है तो वह नई सृष्टि (सम्पूर्ण

रूप से एक नयी सृष्टि) है; पुरानी बातें (पहली नैतिक और आत्मिक स्थिति) बीत गई है!

2 कुरिन्थियों 5:17

आपको और मुझे इस बात में महसूस करना चाहिए और समझना चाहिए कि हम यीशु मसीह में नयी सृष्टि बना गये है। हम उसमें एक सम्पूर्ण नए जीवन को पाने के लिए बुलाए गऐ हैं। जो हम थे और जो कुछ पुराने जीवन में हमारे पास था उन सब को छोडने में हमें इतना भय नही करना चाहिए कि हम उन सब बातों को स्वतंत्रता से ग्रहण भी न कर पायें और उनका आनंद भी न उठा जायें जो परमेश्वर ने हमारे नए जीवन के लिए रखी हैं।

मैंने इन बातों को तब जाना परमेश्वर ने मझसे कहा "जॉयस, क्या तुम महसूस नही करती कि यह बात ही नई सृष्टि की वास्तविकता की नींव है; कि पुरानी सब बातें बीत गई हैं और सब बातें एकदम नयी हो गयी है?"

यह बात केवल उसी समय खरी नहीं होती हैं जब हम बस वेदी के पस जाते हैं या मसीह के लिए किसी निर्णय को करते है। यह नए सृष्टि के जीवन शैली का एक निरन्तर चलने वाला सिद्धान्त हैं।

पुराने से बाहर निकलें, नए में समा जायें!

क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचे।

इब्रानियों 11:40

क्या अभी तक आपने इस बात को महसूस किया है कि जो कुछ आपके पास है वो आपको इतना बुरा नहीं लगता अगर आप बस उसकी तुलना उन बातों से करना बंद कर दें जो आपके पास हुआ करती थी?

जब हम भारत में सेवकाई करने जाते है, जहाँ पर गरीबी और रहन - सहन का स्तर एकदम भयंकर है, उन लोगों की स्थिति उनसे अधिक हमें परेशान करती है। क्यों ? जिस तरह से वो रहते हैं उनके पास उसकी तुलना करने के लिए और कुछ नहीं होता है।

आज कुछ देशों में लोगों के पास हम जो देखते हैं वो उनके पास हमेशा से ही है। हम निश्चय ही, हमेशा अमेरिका में रहे हैं बहुतायत से है। इसलिए जब हम दूसरे देशों में जाते है तो जहाँ कहीं भी हम देखते हैं हम ऐसी स्थितियों को देखते है जो कि हम जिस स्थिति को हमेशा से जाते हैं उसकी *तुलना* में एकदम भयंकर है जिसको हम बयान भी नही कर सकते है।

अपने पुराने जीवन, जो अब है भी नही, के कारण दिन पर दिन निराशा, और कुचले हुए जीवन को बिताने का क्या अर्थ है?

बैठे रहकर बस पुरानी बातों को न सोचें। पिछली बातों को अब और मत याद कीजिए। वो सब तो अब चला गया है, कुछ नयी और उत्तम बातों ने उनका स्थान ले लिया है, बस अगर आपको यह पता हो तो।

उन बातों की ओर बढ़ते जाइए जो सामने हैं।

जब निराशा आती है तो आपको क्या करना चाहिए—निराशा तो अवश्य आयेगी, क्योंकि ये जीवन की एक सच्चाई है? हो सकता है ये एक छोटी बात हो या एक बड़ी बात हो । चाहे वो एक महत्वहीन

पिकनिक हो जो बारिश के कारण न हुई हो या एक महर्तवपूर्ण सगाई हो जो टूट गई हो।

चाहे किसी भी रूप में हो, निराशा तो आनी है। जब ये आपको पत्थर के सदृश दबाती है, आप या जो उसके नीचे दब कर इतना अधिक निराश हो सकते हैं कि आपका विनाश भी हो सकता है, या तो इस पत्थर पर कदम रखकर आप उन्नति के मार्ग में बढ़कर उच्च और उत्तम वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं।

कोई भी ऐस जरिया नहीं है कि आप बैठकर नकारात्मक रूप से सोचते रहें और एक सकारात्मक जीवन को प्राप्त करें। ये काम नहीं करेगा। जितना अधिक आप अपनी निराशाओं के बारे में सोचेंगे, उतना अधिक आप निराशावान हो जायेंगे। यदि आप लम्बे समय तक निराशावान रहेंगे तो आप का विनाश हो जाएगा। अगर आपका विनाश हो जाएगा तो आप एक बहुत बड़ी समस्या में पड़ जायेंगे।

परन्तु परमेश्वर के पास आपके लिए इससे उत्तम बातें है!

यह एक नया दिन है। इसलिए जब अगली बार निराशा आपके मार्ग में आयेगी तो आप पुनः आशावन् बन जाइए। अपने आप को परिस्थिति के अनुसार ढाल लें और सम्भाल लें। जो कुछ पीछे छूट गया उसको भूल कर निरन्तर उन बातों की और बढ़ते जाइए जो आपके सामने है।

इस बात को याद रखें कि परमेश्वर आपके जीवन में एक नए कार्य को कर रहा है। इसलिए अपने अतीत को भूल जाइए और जो नया जीवन उसने आप के लिए सोचा है और तैयार किया है उसको बहुतायात और आनंद से जियें।

सारांश

और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में (वास्तविक रूप से) बसे (ठहरे जाये, बना रहे अपने स्थाई निवास को बना ले) कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालो।

इफिसियों 3:17

मैं आपको उत्साहित करना चाहती हूँ कि आप इस बात से सचेत रहें कि आप अपनी आशा और दृढ निश्चय को कहाँ पर रखते हैं।

इफिसियों 3:17 में हमें बताया है कि हमें प्रेम में जड़ पकड़ना है और उसमें नीव डालनी है। हमें यीशु मसीह के प्रेम और उस में जड़ पकड़नी है और नींव डालनी है बजाय कि अन्य लोगों या अपने बच्चों या अपने मित्रों या अपनी नौकरी पर।

यीशु मसीह को चट्टान कहा गया है। वो एक ऐसी चट्टान यीशु को चट्टान कहा गया है। वह ऐसा चट्टान है जो टलने का नहीं।

यदि अपने मार्ग को चट्टान के चारों ओर लिपटा हुआ पाते हैं तो जब छोटी परेशानियाँ आती हैं तो कहने में सक्षम होंगे, "ओह, ठीक है" और अपने जीवन में आगे बढ़ जायेंगे। जब बड़ी निराशायें आती हैं तो

आप प्रभु से भावनात्मक चंगाईयाँ प्राप्त कर सकते हैं और उसकी सामर्थ्य से आप आगे बढ़ने के निर्णय कर सकते हैं ।

अगर आपने किसी और बात में जड़ पकड़ी है और नीव डाली है, आप का अंत निराशा, उदासी और विनाश में हो जाएगा क्योंकि कुछ भी और कोई भी एक मजबूत चट्टान नहीं बन सकती है, सिवाय यीशु मसीह के!

किसी भी परिस्थिति के अनुसार अपने को ढालना और उसके अनुसार अपने को सम्भाल लेना सीखना चाहिए। आप ऐसा कर सकते हैं। आपको ऐसा क्यों करना चाहिए? बस अपनी खातिर।

विभिन्न लोगों और स्थितियों को स्वीकार करना और सामंजस्य बिठाना अपना सुअवसर समझिये ।

जीवन में जो निराशाएँ आती हैं उन पर मनन न करते रहें। उन बातों को जाने दे और होने दे कि परमेश्वर आपकी देख–रेख करे। निराशा का उसकी शुरूआत में ही सामना करें और परिस्थिति को सुधारने के लिए आपको जो भी बदलाव करने की ज़रूरत हो उन्हें तुरन्त करें।

अपनी समस्याओं पर ध्यान देकर निराश होने की बजाय परमेश्वर पर अपने ध्यान को केन्द्रित कीजिए। उसकी प्रतिज्ञाओं पर मनन करें। उसके वचन को अंगीकार करें और अपने आपको तथा अपनी परिस्थिति को प्रार्थना में परमेश्वर के आधीन कर दीजिए।

हुई उन बातों की सूची ले लें जो सब आपके पास बची हुई है, न कि केवल उन सब बातों को जिसे आपने खो दिया है। यह आपके मन को उस वर्तमान पर केन्द्रित कराता है जहाँ परमेश्वर है। याद रखें, यीशु ने अपने लिए बताया कि, "मैं हूँ," ना कि "मैं था" या "मैं हूँगा।" वो अभी यहाँ आपके लिए है। आज से आप अपने जीवन का आनंद उठाना शुरू कर सकते हैं।

भाग दो

वचन

हताश पर विजय हेतु कुछ वचन

(क्या हो जाता मेरा) यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता।

यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ, यहोवा ही की बाट जोता रह।

भजन संहिता 27:13,14

जितनी बातें (मनुष्य को) पूरी जान पड़ती है, उन सब को तो मैंने अधूरी पाया है (यह नहीं माइने रखता कि वो सब कितने विशाल, श्रेष्ठ और उत्तम हो); परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार (अनंत तक) बड़ा है।

भजन संहिता 119:96

विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा टूटे हुए दाँत या उखड़े पाँव के समान है।

नीतिवचन 25:19

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की है; और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।

यिर्मयाह 29:11

परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूँगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की बाट जोहता रहूँगा; मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।

मीका 7:7

आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी (असम्य, उँचे दिमाग वाले और अलग से) न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

रोमियों 12:16

हे प्रियो, बदला न लेना; परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो; कयोंकि लिखा है, "बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला (प्रतिकार) दूँगा।"

रोमियों 12:19

परमेश्वर सच्चा है, (भरोसेमंद, विश्वासयोग्य है और इसिलए वो हमेशा अपनी प्रतिज्ञाओं, के प्रति सच्चा है; और उस पर हम

आश्रित हो सकते है); जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे पुभ यीशु मसीह की संगति में बुलाया हैं।

1 कुरिन्थियों 1:9

परन्तु जैसा लिखा है, "जो बातें आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों (जो उसका प्रेम पूर्वक आदर करते हैं, उसकी बातों को तुरंत मानते हैं और जो कुछ भी भलाई उसने उण्डेली है उसको पहचान कर सकते प्रति पूर्ण रूप से आभार प्रकट करते है।) के लिये तैयार की है ।

1 कुरिन्थियों 2:9

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव (जैसे मसीह के विजय के उपहार) के लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।

2 कुरिन्थियों 2:14

हम भले काम करने में साहस न छोड़े, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।

गलातियों 6:9

और अपनी इच्छा (क्योंकि ऐसा उसे अच्छा लगा) के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया (नियत किया है, प्रेम में हमारे लिए योजना बनायी है), कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।

कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति (हम हो सकें) हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया।

इफिसियों 1:5,6

अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम (अपने उद्देश्य को पूरा) कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है।

इफिसियों 3:20

तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो (परन्तु निरन्तर, बिना शक्तिहीन हुए भलाई करते रहो)

2 थिस्सलुनीकियों 3:13

हताश से सामना करने के लिए प्रार्थना

पिता, आपका वचन मेरे पैरों के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए ज्योंति है।

मैं प्रार्थना करता हूँ मुझे अपनी आशाओं और उम्मीदों की अपने ही समान लोगों पर डालने से बचाइए क्योंकि हम सब एक दूसरे को निराश करने में बहुत काबिल हैं।

होने दे कि जिन लोगों ने मुझे अतीत में निराश किया है उन लोगों के प्रति मैं क्षमा व्यक्त करूँ और उन निराशाओं के दर्दनाक समयों को मैं भुला सकूँ।

परमेश्वर मेरे अन्दर बढ़िए ताकि मैं और, और अधिक आपके समान हो जाऊँ और अपने समान और, और कम हो जाऊँ।

ये बातें मैं यीशु के पवित्र नाम से माँगता हूँ आमीन।

परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध के लिए प्रार्थना

अगर आपने कभी भी यीशु, जो शांति का राजकुमार है, उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण नही किया है तो मैं आपको अभी ऐसा करने के लिए आमंत्रित करती हूँ। निम्नलिखित प्रार्थना को करें और अगर आप वाकई इस बात के प्रति ईमानदार हैं तो आप मसीह में एक नए जीवन को अनुभव करेंगे।

हे पिता,

जगत से ऐसा प्रेम रखा कि आपने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से बचाए गए हैं जो आपकी ओर से एक दान है। उद्धार को कमाने के लिए हम कुछ भी नही कर सकते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ और अपने मुँह से यह अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह आपका पुत्र है जो जगत का उद्धारकर्त्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि वो मेरे लिए क्रूस पर मारा गया और मेरे सब पापों को उठाकर उनकी कीमत को चुकाया। मैं अपने हृदय में यह विश्वास करता हूँ कि आपने यीशु को मृतको में से जिलाया।

मैं आपसे अपने पापों की क्षमा मांगता हूँ। मैं ये अंगीकार करता हूँ कि यीशु मेरा प्रभु है। आपके वचन के अनुसार, मेरा उद्धार हो गया है और अब मैं अनंत काल आपके साथ व्यतीत करूँगा। धन्यवाद, पिता। मैं बहुत आभारी हूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

देखें यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; 1 यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13

लेखिका के विषय में

जॉयस मेयर विश्व के प्रमुख व्यवहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यू यॉर्क टाइम्स की नम्बर 1 सर्वोत्तम विक्रय की गौरव प्राप्त लेखिका, जिन्होंने नब्बे से अधिक प्रेरणादायक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें *लिविन्ग बियन्ड युवर फ़िलिंग्स, पावर थॉट्स,* बैट्टलफील्ड श्रृंखला की संपूर्ण पुस्तकें, और दो उपन्यास, *दि पेन्नी* और *एनि मिनट*, जैसी और भी अन्य पुस्तकें शामिल हैं। उन्होंने शिक्षा देने के लिए हज़ारों ऑडियो सी.डी. के साथ वीडियो सी.डी. की पूरी लाइब्रेरी का विमोचन किया है। संसार भर में जॉयस का प्रतिदिन के *जीवन का आनन्द लीजिए* नामक रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं, और वे सम्मेलनों के संचालन हेतु विस्तृत देशाटन करती हैं। जॉयस एवं उनके पति डेव चार वयस्क बच्चों के माता-पिता हैं और सेन्ट लुईस, मिसौरी में उनका निवासस्थान है।

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org